हदीस क़ुद्सी

संपादन

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील दयावान है।

पाठकों से

यह किताब अपने पाठकों के हाथों में देते हुए हमें बहुत ही खुशी महसूस हो रही है। यह किताब क़ुद्सी हदीसों का एक संक्षिप्त संग्रह है। क़ुद्सी हदीस से अभिप्रेत ऐसी हदीसें होती हैं जिनमें नबी सल्ल० अल्लाह तआला का कथन या क़ौल पेश करते हैं।

क़ुद्सी हदीसों का अपना एक ख़ास रंग होता है और उनकी एक विशेष शैली होती है। उनके पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे अल्लाह अपने बन्दों से बहुत क़रीब होकर बातें कर रहा हो और बातें भी बहुत मीठी और मधुर हों ताकि बन्दा ईश्वरीय तेज और जलाल से भयभीत न हो, बल्कि अपने प्रभु की प्यार भरी बातें सुनकर जीवन के सच्चे रास्ते पर लग जाये और अल्लाह की याद उसके दिल में इस तरह घर कर ले कि वह अपने जीवन में कभी भी अपने रब को भुला न सके।

हदीस क़ुद्सी में जिन विषयों को विशेष रूप से लिया गया है वे ये हैं – तौहीद अर्थात एक ख़ुदा से लौ लगाना, उसी के लिए जीना और उसी के लिए मरना, उसी से दुआएं करना और उसी से आशाएं रखना।

तौहीद के अलावा अल्लाह की इबादत पर भी विशेष ज़ोर दिया गया है और फिर सद्व्यवहार, आचरण की शुद्धता और अच्छे अख़्लाक़ को बुनियादी तौर पर महत्व दिया गया है।

इसके अतिरिक्त हम देखते हैं कि हदीस क़ुद्सी में आख़िरत

की ज़िन्दगी और अल्लाह से मुलाक़ात के शौक़ को ख़ास तौड़ पर उभारा गया है और लोगों को इस बात की नसीहत की गयी है कि वे अपनी आख़िरत को संवारने और अपने रब को राज़ी और ख़ुश रखने की कोशिश से कभी ग़ाफ़िल न हों।

इस किताब को तर्तीब देने में बिरादरम, मुहम्मद अहमद साहब का पूरा सहयोग हमें प्राप्त रहा है, इस के लिए हम उन के आभारी हैं।

आशा है कि हमारे पाठकगण इस किताब से पूरा-पूरा लाभ उठाने की कोशिश करेंगे। अल्लाह हमारी कोशिशों को क़ुबूल करे।

भवदीय
मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां
८ अगस्त १९९१ ई०

क्रम

सांकेतिक शब्दार्थ

संक्षिप्त में इस्तेमाल कुछ ऐसे शब्द इस किताब में आयेंगे, जिनकी मुकम्मल शक्ल और मतलब किताब के अध्ययन से पहले जान लेना ज़रूरी है, ताकि अध्ययन के दौरान कोई परेशानी न हो। वे शब्द निम्नलिखित हैं:

अलैहि० : इसकी मुकम्मत शक्ल है, '**अलैहिस्सलाम**' यानी 'उन पर सलामती हो!' नबियों और फ़रिश्तों के नाम के साथ यह आदर और प्रेम सूचक शब्द बढ़ा देते हैं।

रज़ि० : इसका पूर्ण रूप है, '**रज़ियल्लाहु अन्हु**,' इसके मायने हैं, 'अल्लाह उनसे राज़ी हो!' **सहाबी** के नाम के साथ यह आदर और प्रेम सूचक दुआ बढ़ा देते हैं।

'**सहाबी**' उस खुश-क़िस्मत मुसलमान को कहते हैं, जिसे नबी (सल्ल०) से मुलाक़ात का मौक़ा मिला हो। **सहाबी** का बहुवचन **सहाबा** है और स्त्रीलिंग **सहाबियः** है।

रज़ि० अगर किसी **सहाबियः** के नाम के साथ इस्तेमाल हुआ हो तो **रज़ियल्लाहु अन्हा** पढ़ते हैं और अगर **सहाबा** के लिये आये तो **रज़ियल्लाहु अन्हुम** कहते हैं।

सल्ल० : इसका पूर्ण रूप है, '**सल-लल-लाहु अलैहि वसल्लम**' जिसका मतलब है, 'अल्लाह उन पर रहमत और सलामती की बारिश करे!' हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का नाम लिखते, लेते या सुनते हैं तो आदर और प्रेम के लिये दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।

तौहीद

(एकेश्वरवाद)

१. हज़रत अबू दरदा रज़ि० से रिवायत (वर्णित) है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरा और जिन्नों और मनुष्यों का अजीब मामला है। मैं इनको पैदा करता हूँ और ये मेरे अतिरिक्त दूसरों की बन्दगी करते हैं। मैं इन्हें रोज़ी देता हूँ और ये आभार दूसरों के प्रति प्रकट करते हैं।"

- जामे सग़ीर

२. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि तुम्हारा पालनहार प्रभु कहता है "मैं इस बात का हक़ रखता हूँ कि मेरा ही डर रखा जाये और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को पूज्य न बनाया जाये। अतः जो व्यक्ति किसी दूसरे को पूज्य बनाने से बचा रहा और उसने मेरे सिवा किसी को पूज्य न समझा तो मेरे योग्य यही है कि मैं उसे बख़्श दूँ।"

- अहमद, तिरमिज़ी, नसई

३. हज़रत उम्मेहानी रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि क़ियामत के दिन एक पुकारने वाला पुकार कर कहेगा अर्थात् अल्लाह तआला कहेगा: "ऐ अल्लाह को एक मानने वालो, तुम आपस में एक–दूसरे की ख़ताएँ माफ़ कर दो और तुम्हारा सवाब और प्रतिदान मेरे ज़िम्मे है।" - तबरानी

४. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि तुम्हारा रब कहता है: "यदि मेरे बन्दे मेरी पूर्ण रूप से इबादत और बन्दगी करें, तो मैं रात को उन पर वर्षा किया करूँ और दिन को कारबार की खातिर धूप निकाल दिया करूँ और कड़क की आवाज़ से उन्हें सुरक्षित रखूँ।" - अहमद, हाकिम

५. हज़रत वह्ब बिन मुनब्बेः रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "सारे आसमान और ज़मीन मेरी समाई के सिलसिले में असमर्थ रहे, मेरी समाई मोमिन के दिल में होती है।" - अहमद

शिर्क

१. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "हे आदम के बेटे, तू जब तक मुझे पुकारता रहेगा और मुझ से आस बनाये रखेगा, मैं तुझे क्षमा करता रहूँगा, चाहे तू किसी हालत में हो, और मुझे कुछ भी परवाह नहीं। हे आदम की औलाद तेरे गुनाह अगर इतने ज़्यादा हों कि आकाशों तक पहुँच जायें और तू मुझ से क्षमायाचना करे, तो भी मैं उन गुनाहों को क्षमा कर दूँगा, और मुझे कुछ परवाह नहीं। हे आदम के बेटे, अगर तू मुझ से ऐसी हालत में मिलेगा कि तेरे पास इतनी ख़ताएँ हों जिन से धरती भर जाये, किन्तु उन ख़ताओं और गुनाहों में शिर्क न हो तो मैं तुझ से उतनी ही बख़्शिश (क्षमा दान) के साथ मिलूँगा।" - तिर्मिज़ी

२. हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "जिस व्यक्ति की यह धारणा हो कि मुझे उसके गुनाह क्षमा कर देने की सामर्थ्य प्राप्त है, तो मैं उसकी ख़ताएँ बख़्श देता हूँ और कुछ परवाह नहीं करता, शर्त यह है कि वह मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करता हो।" - शरहुस्सुन्नह

३. हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "हे आदम के बेटे, जब तक तू मेरी बन्दगी और इबादत करता रहेगा और मुझ से आशा रखेगा, और मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करेगा, तो मैं तुझे क्षमा करता और तुझे बख़्शता रहूँगा। तू यदि आकाश और धरती को

भर देने वाली ख़ताएँ ले कर मेरे समक्ष आयेगा, तो मैं उतनी ही बख़्शिश और क्षमादान ले कर तुझ से मिलूँगा और तेरे गुनाहों को माफ़ कर दूँगा और कुछ परवाह न करूँगा।" - तबरानी

४. हज़रत अयाज़ बिन हिमार मुजाशियी रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एक दिन अपने खुतबे (भाषण) में कहा कि लोगो, जान लो कि मेरे रब ने मुझे यह आदेश दिया है कि मैं तुम्हें वे बातें बता दूँ जो तुम नहीं जानते जो मुझे अल्लाह ने आज बतायी हैं। यह कि (अल्लाह कहता है:) "जो माल मैंने किसी बन्दे को दिया है वह उसके लिए हलाल (वैध) है और निस्सन्देह मैंने अपने सभी बन्दों को हक़ की ओर प्रवृत्त पैदा किया किन्तु उनके पास शैतान आये और उनको उनके धर्म से बहका दिया और जो चीज़ें मैंने उनके लिए हलाल की थीं उनको उन पर हराम कर दिया और उन्होंने उनको हुक्म दिया कि वे मेरे साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहरायें जिन पर कोई प्रमाण मैंने नहीं उतारा। और निश्चय ही अल्लाह ने धरती के लोगों पर एक नज़र डाली, तो सिवाय कुछ किताब वालों के जो दीन (धर्म) पर क़ायम थे सभी अरब और ग़ैर अरब वालों पर क्रुद्ध हुआ। और उसने कहा कि मैंने तुझे इसी बात के लिए भेजा कि तेरी परीक्षा करूँ और तेरे कारण क़ौम की परीक्षा करूँ। और तुझ पर मैंने किताब उतारी कि जिसे पानी धो नहीं सकता। जिसे तू सोते और जागते पढ़ता रहता है। और निश्चय ही अल्लाह ने मुझे आदेश दिया कि मैं क़ुरैश को मिटा दूँ। मैंने कहा कि यदि मैं ऐसा करूँ, तो वे मेरा सिर कुचल कर रोटी की तरह चौड़ा कर देंगे। उसने कहा कि तू उनको निकाल दे जिस प्रकार उन्होंने तुझे निकाला। तू उन से युद्ध कर हम तेरी मदद करेंगे। तू अपनी सेना पर ख़र्च कर, हम तुझ पर ख़र्च करेंगे। और तू उन पर सेना भेज, हम उससे पाँच गुना सेना

भेजेंगे। और अपने आज्ञाकारियों को साथ ले कर उन लोगों से लड़ जिन्होंने तेरी अवज्ञा की।" - मुस्लिम

५. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है : "मैं सभी साझीदारों के शिर्क से बढ़ कर बेपरवा हूँ कि किसी को अपना शरीक बनाऊँ, जिस किसी ने कोई कर्म किया और उसमें उसने किसी और को भी मेरा शरीक ठहराया तो मैं उसे और उसके शिर्क को छोड़ देता हूँ।" - मुस्लिम

६. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है : "जिस किसी व्यक्ति ने किसी कर्म में मेरे ग़ैर को सम्मिलित कर लिया, तो मैं उससे विरक्त हूँ और वह कर्म उसी के लिए है जिस के लिए वह किया गया, मेरा उससे कोई संबन्ध नहीं।" - मुस्लिम

७. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि प्रभु महान अल्लाह कहता है : "तेरे समुदाय के लोग हमेशा कहते रहेंगे कि यह कैसे हुआ और यह कैसे हुआ? यहाँ तक कि वे कहेंगे कि इस सृष्टि का स्रष्टा तो अल्लाह है फिर प्रभु महान अल्लाह को किसने पैदा किया?" - मुस्लिम

८. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है : "आदम का बेटा ज़माने को बुरा कह कर मुझे तकलीफ़ पहुँचाता है। हालाँकि ज़माना तो मैं हूँ। सारे कामों की बाग-डोर मेरे हाथ है। मैं ही रात-दिन को उलटता–पलटता हूँ।" - बुख़ारी, मुस्लिम

९. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने

कहा कि अल्लाह तआला कहता है : "आदम के बेटे ने मुझे झुठलाया हालाँकि यह उसके लिए उचित न था। और उसने मुझे बुरा कहा जबकि यह उसके लिए उचित न था। उसका मुझे झुठलाना यह है कि वह कहता है कि अल्लाह ने जिस तरह मुझे पहली बार पैदा किया है दोबारा कदापि पैदा न करेगा। जब कि मेरे लिए उसको पहली बार पैदा करना पुनः पैदा करने से कुछ अधिक आसान तो न था। और उसका मुझे बुरा कहना यह है कि वह कहता है कि अल्लाह ने अपना बेटा बनाया है, हालाँकि मैं यकता, निरपेक्ष, सब का आश्रय हूँ, न मुझ से कोई पैदा हुआ और न मैं किसी से पैदा हुआ, न कोई मेरा समकक्ष है।"

इब्ने अब्बास रज़ि० से एक रिवायत में ये शब्द आये हैं: "उसका मुझे बुरा कहना यह है कि वह मेरे लिए बेटा घोषित करता है हालाँकि मेरी महिमा के प्रतिकूल है कि मैं अपनी कोई पत्नी बनाऊँ या कोई बेटा बनाऊँ।" - बुख़ारी

१०. हज़रत ख़ालिद बिन जुहनी रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें हुदैबिया में सवेरे की नमाज़ पढ़ाई। उस रात वर्षा हुयी थी। नमाज़ के बाद नबी सल्ल० लोगों की ओर फिरे और कहा कि क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब ने क्या कहा? लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसका रसूल ही ज़्यादा जानता है। आपने कहा कि अल्लाह कहता है : "मेरे कुछ बन्दों ने इस हाल में सुबह की कि वे मुझ पर ईमान रखते थे और कुछ इस हाल में कि उन्हों ने मेरा इनकार किया। जिसने यह कहा कि हम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया से वर्षा हुयी वह तो मुझ पर ईमान रखने वाला है और नक्षत्रों को न मानने वाला है और जिसने यह कहा कि अमुक नक्षत्र के कारण हम पर वर्षा हुयी, उसने मेरे

साथ कुफ्र किया। और वह नक्षत्रों पर ईमान रखता है।"

-बुख़ारी, मालिक, नसई

११. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत हदीस में है कि अल्लाह तआला कहता है: "जब भी, मैंने अपने बन्दों पर कोई नेमत उतारी, तो उनमें दो गरोह हो गये। एक गरोह मुझ पर ईमान लाया और नक्षत्रों का इनकार किया और एक गरोह ने नक्षत्रों को माना और मेरे साथ कुफ़्र किया।" -नसई

यह भी शिर्क है

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अन्तिम समय में कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो धर्म को दुनिया प्राप्त करने का साधन बनायेंगे। लोगों को दिखाने के लिए भेड़ की खाल और ऊन का वस्त्र पहनेंगे। उनकी ज़बानें और उनकी बातें शकर से भी अधिक मीठी होंगी किन्तु दिल उनके भेड़ियों की तरह कठोर होंगे। अल्लाह तआला ऐसे लोगों के लिए कहेगा : "ये लोग मेरी दी हुई मोहलत और ढील पर धोखा खा रहे हैं अथवा मेरा विरोध करने का दुस्साहस कर रहे हैं। अतः मैं अपनी क़सम खाकर कहता हूँ कि ऐसे भारी फ़ितने (उपद्रव) भेजूंगा, जिनके कारण बड़े-बड़े समझदार और सहनशील लोग भी हैरान होकर रह जायेंगे।" - तिरमिज़ी

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि क़ियामत के दिन पहला व्यक्ति जिसके बारे में फ़ैसला किया जायेगा (कि वह झूठा है) वह व्यक्ति होगा जिसको शहीद कर दिया गया था। जब उसको पेश किया जायेगा, तो अल्लाह उसे अपनी नेमतें याद दिलायेगा और वह उनको स्वीकार करेगा। फिर अल्लाह कहेगा : "तुमने इनके सिलसिले में आभार प्रकट करने को क्या काम किया?" वह कहेगा कि मैं तेरी राह में लड़ा यहां तक कि शहीद हो गया। अल्लाह कहेगा : "तुम झूठे हो, तुम तो इसलिए लड़े थे कि तुमको लोग बहादुर कहें। अतएव तुझे बहादुर कहा गया।" फिर उसके बारे में हुक्म हो

जायेगा और उसे मुंह के बल घसीटकर ले जाया जायेगा यहां तक कि आग (नरक) में डाल दिया जायेगा।

फिर वह व्यक्ति होगा जिसने इल्म हासिल किया और दूसरों को उसकी शिक्षा दी और क़ुरआन पढ़ा। जब उसको पेश किया जायेगा, तो अल्लाह उसे अपनी नेमतें याद दिलायेगा और वह उनको स्वीकार करेगा। फिर अल्लाह कहेगा, "तुमने इनके सिलसिले में आभार प्रकट करने को क्या काम किया?" वह कहेगा कि मैंने इल्म हासिल किया और दूसरों को उसकी शिक्षा दी और तेरे लिए क़ुरआन पढ़ा। अल्लाह कहेगा: "तुम झूठे हो, तुमने तो इल्म इसलिए हासिल किया था कि लोग तुम्हें आलिम कहें और क़ुरआन इसलिए पढ़ा कि लोग तुम्हें क़ारी कहें। अतएव तुम्हें आलिम और क़ारी कहा।" फिर उसके बारे में हुक्म हो जायेगा और उसको मुंह के बल घसीटकर ले जाया जायेगा यहां तक कि आग में डाल दिया जायेगा।

फिर वह व्यक्ति होगा जिसको अल्लाह ने रोज़ी में कुशादगी दी थी और उसे हर तरह का माल दिया था। जब उसको पेश किया जायेगा, तो अल्लाह उसे अपनी नेमतें याद दिलायेगा और वह उनको स्वीकार करेगा। फिर अल्लाह कहेगा: "तुमने इनके सिलसिले में आभार प्रकट करने को क्या काम किया?" वह कहेगा कि मैंने हर एक ऐसी राह में तेरे लिए अपना माल ख़र्च किया जिसमें माल ख़र्च करना तुझे पसन्द था और कोई ऐसी राह मैंने छोड़ी नहीं। अल्लाह कहेगा, "तुम झूठे हो, तुमने तो इसलिए ख़र्च किया कि तुम्हें दानशील कहा जाय। अतएव तुझको दानशील कहा गया।" फिर उसके बारे में हुक्म हो जायेगा और उसको मुंह के बल घसीटकर ले जाया जायेगा यहां तक कि आग में डाल दिया जायेगा। - मुस्लिम

तक़दीर

१. हज़रत अबू अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते सुना है कि अल्लाह तआला ने अपनी दायीं मुट्ठी में एक जनसमूह को और दूसरी मुट्ठी में दूसरे जनसमूह को लेकर कहा : "ये जन्नत के लिए हैं और ये दोज़ख़ के लिए।" - अहमद

२. हज़रत अनस रज़ि० और हज़रत इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "जो मेरे फ़ैसले और मेरी नियत की हुई क़िस्मत से राज़ी नहीं है, उसको चाहिए कि वह मेरे सिवा कोई दूसरा रब तलाश कर ले।" - बैहक़ी, तबरानी

एक हदीस में ये शब्द आये हैं कि अल्लाह तआला कहता है: "जो व्यक्ति मेरे फ़ैसले और हुक्म से ख़ुश न हो और मेरी भेजी हुई विपत्ति और मुसीबत पर सब्र न करे उसको चाहिए कि मेरे सिवा कोई दूसरा रब खोज ले।" - तबरानी, अबू दाऊद

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "नज़्र देने से आदम के बेटे को वह चीज़ नहीं प्राप्त हो सकती, जो हमने उसके लिए नियत न की हो और उसकी तक़दीर में लिखी न हो। हां उसका नज़्र देना उसको उस तक़दीर से मिला देता है, जो नज़्र के साथ मैंने प्रलम्बित कर रखी है और जिसके कारण मैंने कंजूस के हाथ से माल ख़र्च कराना लिख दिया होता है। अतः कंजूस इसके कारण मुझ को माल देता है, जो इससे पहले तो न देता।"
- अहमद, बुख़ारी, नसई

अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखना

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह कहता है: "मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके पास होता हूँ। यदि वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ। और यदि वह मुझे किसी जनसमूह में याद करता है तो मैं एक ऐसे समूह में उसकी चर्चा करता हूँ जो उस बन्दे के समूह से कहीं अच्छा और उच्च होता है। और अगर कोई बन्दा मुझसे एक बालिश्त (बित्ता) क़रीब होता है तो मैं एक हाथ उससे क़रीब हो जाता हूँ। और जब कोई बन्दा मुझसे एक हाथ क़रीब होता है तो मैं दो हाथ उससे क़रीब हो जाता हूँ। और अगर कोई बन्दा मेरी ओर धीरे-धीरे चलकर आता है तो मैं उसकी ओर दौड़कर बढ़ता हूँ।"

-बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, नसई, इब्नमाजह

२. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि प्रतापवान अल्लाह कहता है: "मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ। वह जैसा चाहे मेरे साथ गुमान रखे।"

-बैहक़ी, तबरानी फ़िल कबीर

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि प्रतापवान अल्लाह कहता है: "मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ जो वह मेरे साथ रखता है। यदि वह

मुझसे अच्छा गुमान रखे तो यह उसी के लिए अच्छा है। और अगर बुरा गुमान रखे तो यह उसी के लिए बुरा है।''

-अहमद, मुस्लिम

४. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: ''मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ। और जब वह मुझे पुकारता है तो मैं उसके साथ होता हूँ।'' -तिरमिज़ी

५. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि प्रतापवान प्रभु अल्लाह कहता है: ''मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ जो वह मुझसे रखता है। मैं उसके साथ होता हूँ जहां मुझे वह याद करता है। और ख़ुदा की क़सम ख़ुदा अपने बन्दे की तौबा से उससे कहीं अधिक प्रसन्न होता है, जितना कि तुम में से कोई व्यक्ति अपने खोये हुए ऊंट को किसी चटियल मैदान में पाकर होता है। और (वह कहता है) जो मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है मैं उससे एक हाथ क़रीब होता हूँ। और जो मुझसे एक हाथ क़रीब होता है मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ। और जो मेरी तरफ़ चलकर आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूँ।'' - बुख़ारी, मुस्लिम

६. हज़रत वासिला बिन अस्कह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह कहता है: ''मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ जो वह मेरे साथ रखता है। अगर अच्छा गुमान रखता है, तो मैं भी उसके साथ अच्छा मामला करता हूँ। और अगर वह बुरा गुमान करता है, तो मैं भी वही व्यवहार करता हूँ।'' - तबरानी

७. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के

रसूल सल्ल० ने कहा कि प्रतापवान प्रभु अल्लाह कहता है: "जब मेरे किसी बन्दे को मुझसे मिलना प्रिय होता है, तो मुझे भी उससे मिलना प्रिय होता है और जब कोई मुझसे मिलने को नापसन्द करता है, तो मैं भी उससे मिलने को नापसन्द करता हूँ।"
-बुख़ारी, नसई, मालिक

८. हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला कहता है: "मैं अपने किसी बन्दे के हक़ में रिआयत (लेहाज़) का ज़िम्मेदार नहीं होता जब तक कि वह मेरे हक़ और अधिकारों की रिआयत न करे।"
- तबरानी

९. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला एक बन्दे को नरक में जाने का आदेश देगा। जब वह नरक के किनारे पहुंचेगा तो पलटकर देखेगा और कहेगा कि हे रब अल्लाह की क़सम मैं तो तुझसे अच्छा गुमान रखता था। अल्लाह तआला कहेगा: "उसे लौटा दो। मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब हूँ।" फिर उसे बख़्श दिया जायेगा। - बैहक़ी

अल्लाह की याद और उसका स्मरण

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "जब मेरा बन्दा मुझे याद करता है और उसके दोनों होठ मेरे ज़िक्र (मेरी चर्चा) से हिलते हैं, तो मैं उसके निकट ही होता हूँ।"

- इब्न माजह

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "हे आदम के बेटे, यदि तूने मेरा ज़िक्र किया तो तूने मेरा आभार प्रकट किया और यदि तूने मुझको भुला दिया तो तूने मेरे साथ कुफ़्र (इनकार कृतघ्नता) की नीति अपनायी।" - तबरानी

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि निश्चय ही अल्लाह तआला के चलने–फिरने वाले फ़रिश्तों का एक गरोह ऐसा भी है कि उस गरोह के फ़रिश्ते ज़िक्र की मजलिसों को तलाश करते रहते हैं। और जब वे ऐसी कोई मजलिस पा लेते हैं जिसमें अल्लाह का ज़िक्र हो रहा होता है तो वे लोगों के साथ बैठ जाते हैं। और वे अपने पंख एक-दूसरे पर फैला लेते हैं, यहां तक कि अपने और निकटवर्ती आसमान के बीच के हिस्से को भर देते हैं। जब लोग चले जाते हैं तो ये फ़रिश्ते आसमानों की ओर चढ़ जाते हैं। नबी सल्ल० कहते हैं कि प्रतापवान अल्लाह उनसे पूछता है हालांकि वह उनके विषय में

भली-भांति जानता है: "तुम कहां से आये हो?" वे कहते हैं कि धरती में तेरे कुछ ऐसे बन्दों के पास से हम आये हैं जो तेरी महानता और तेरी बड़ाई बयान कर रहे थे और केवल तुझी को पूज्य कहकर पुकारते थे और तेरी प्रशंसा कर रहे थे और तुझसे कुछ मांग रहे थे। अल्लाह कहता है: "वे मुझसे क्या मांग रहे थे?" वे कहते हैं कि वे तुझसे जन्नत मांग रहे थे। अल्लाह कहता है: "क्या उन्होंने मेरी जन्नत देखी है?" वे कहते हैं नहीं, हे मेरे रब! अल्लाह कहता है: "यदि वे मेरी जन्नत को देख लें तो फिर उनका क्या हाल हो!" फ़रिश्ते कहते हैं कि और वे तुझसे पनाह भी चाहते थे। अल्लाह कहता है: "किस चीज़ से वे मेरी पनाह चाहते थे?" वे कहते हैं तेरी आग (नरक) से, हे रब। अल्लाह कहता है: "क्या उन्होंने मेरी आग देखी है?" वे कहते हैं कि नहीं। अल्लाह कहता है: "यदि वे मेरी आग को देख लें तो उनका क्या हाल हो ?" फिर फ़रिश्ते कहते हैं कि वे तुझसे बख़्शिश तलब कर रहे थे।

नबी सल्ल० कहते हैं कि इस पर अल्लाह कहता है: "मैंने उनकी बख़्शिश कर दी और जो कुछ उन्होंने मांगा वह मैंने उनको दिया और जिस चीज़ से उन्होंने पनाह मांगी मैंने उमसे उन्हें पनाह दी।"

नबी सल्ल० फरमाते हैं कि वे (फ़रिश्ते) कहेंगे कि हमारे रब उनमें तो अमुक व्यक्ति भी था जो बड़ा ही ख़ताकार है। वह तो रास्ते से गुज़र रहा था तो उन लोगों के साथ (बस यूं ही) बैठ गया।

नबी सल्ल० कहते हैं कि अल्लाह कहेगा: "मैंने उसे भी बख़्श दिया। वे ऐसे लोग हैं कि उनके पास बैठने वाला भी बदनसीब नहीं होगा।" -मुस्लिम, बुख़ारी, तिरमिज़ी, नसई

४. हज़रत इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह कहता है : "जिस व्यक्ति को मेरे ज़िक्र (याद) ने इतना व्यस्त रखा कि वह मुझसे कुछ मांग न सका, तो मैं ऐसे बन्दे को मांगने वाले से अधिक देता हूँ।"

-बुख़ारी, बैहक़ी

५: हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है : "यदि कोई बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उसे तन्हाई में याद करता हूँ। और जब कोई बन्दा किसी जन समूह में मुझे याद करता है, तो मैं उसको ऐसे समूह में याद करता हूँ जो उसके जनसमूह से कहीं अच्छा और बड़ा होता है।" - बैहक़ी

६. हज़रत उमारह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरा कामिल बन्दा वह है जो मुझको उस हालत में याद करता है जबकि वह अपने दुश्मन से मिलता है।" - तिरमिज़ी

७. हज़रत मआज़ बिन अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला क़हता है : "जब कोई बन्दा मुझको अपने जी में याद करता है तो मैं उसको सामान्य फ़रिश्तों के समूह में याद करता हूँ और जब मुझको कोई बन्दा किसी जनसमूह में याद करता है तो मैं उसका ज़िक्र अपने क़रीबी फ़रिश्तों में किया करता हूँ।" - तबरानी

अल्लाह तआला की बख़्शिश और रहमत

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि जब अल्लाह ने ख़िल्क़त (लोगों) को पैदा करने का फ़ैसला किया तो एक किताब लिखी जो अर्श पर उसके पास है। उसमें लिखा: "निश्चय ही मेरी रहमत (दयालुता) मेरे ग़ज़ब (प्रकोप) से आगे बढ़ गयी है।"

एक हदीस में ये शब्द आये हैं: "मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है।" — बुख़ारी, मुस्लिम

२. हज़रत सौबान रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब कोई बन्दा अल्लाह की रज़ामन्दी (ख़ुशी) की तलाश में रहता है और निरन्तर इसी तलाश में लगा रहता है, तो प्रतापवान प्रभु अल्लाह जिब्रील (अ०) से कहता है: "मेरा अमुक बन्दा मुझे राज़ी करने की तलाश में लगा हुआ है। जान रखो कि मेरी रहमत उस पर है।"

हज़रत जिब्रील अ० कहते हैं कि अल्लाह की रहमत अमुक व्यक्ति पर हो और फिर अर्श को उठाने वाले (फ़रिश्ते) और उनके आस-पास के फ़रिश्ते भी यही कहते हैं, यहां तक कि यही बात सातों आसमान के रहने वाले भी कहने लगते हैं। फिर वह रहमत उसके लिए ज़मीन पर उतरती है। — अहमद

३. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि तिरस्कृत शैतान ने अल्लाह से कहा कि मुझे तेरे प्रताप की सौगन्ध, जब तक तेरे बन्दों के प्राण उनके

शरीर में रहेंगे, मैं उन्हें बहकाता और पथभ्रष्ट करता रहूँगा। अल्लाह तआला ने कहा: "मुझे अपने प्रताप और तेज और मुझे अपने उच्च मर्तबा (प्रतिष्ठा) की सौगन्ध, जब तक मेरे बन्दे मुझ से क्षमा-याचना करते रहेंगे; मैं उन्हें क्षमा करता रहूँगा।"

— अहमद

४. हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है : "हे मेरे बन्दो, मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर हराम किया है और मैंने तुम्हारे लिए भी ज़ुल्म को हराम कर दिया। अतः आपस में तुम एक-दूसरे पर ज़ुल्म न किया करो। हे मेरे बन्दो, तुम सब पथभ्रष्ट हो सिवाय उस व्यक्ति के जिसको मैंने राह दिखायी।[1] तुम मुझसे मार्ग-दर्शन की याचना करो, मैं तुम्हें राह दिखाऊंगा और तुम्हारा मार्ग-दर्शन करूंगा। हे मेरे बन्दो, तुम सब के सब भूखे हो सिवाय उसके जिसको मैं खिलाऊं। अतः मुझी से खाना मांगो, मैं तुम्हें खिलाऊंगा। हे मेरे बन्दो, तुम सब के सब नंगे हो सिवाय उसके जिसको मैं कपड़ा पहनाऊं। अतः मुझसे वस्त्र मांगो, मैं तुम्हें पहनाऊंगा। हे मेरे बन्दो, तुम रात-दिन ख़ताएं करते रहते हो और मैं सब गुनाहों को बख़्शता हूं। अतः तुम मुझी से क्षमा-याचना करो, मैं तुम्हें क्षमा करूंगा। हे मेरे बन्दो, तुम मुझे कोई हानि नहीं पहुंचा सकते और न मुझे कोई लाभ पहुंचा सकते हो। हे मेरे बन्दो, यदि तुम्हारे अगले और पिछले लोग और तुम्हारे मानव और तुम्हारे जिन्न सब के सब एक बड़े संयमी और डर रखने वाले व्यक्ति के हृदय की तरह हो जायं, तो इससे मेरे राज्य

---

१. अर्थात आदमी पथभ्रष्टता और गुमराही से निकल नहीं सकता जब तक वह खुद अल्लाह के दिखाये हुए मार्ग का अनुसरण न करे।

में कुछ भी अभिवृद्धि न होगी। हे मेरे बन्दो, यदि तुम्हारे अगले और पिछले लोग और तुम्हारे मानव और तुम्हारे जिन्न सब के सब एक बहुत बड़े दुस्साहसी, मर्यादाहीन व्यक्ति के हृदय की तरह हो जायं, तो इससे मेरे राज्य में कुछ भी कमी न होगी। हे मेरे बन्दो, तुम्हारे अगले और पिछले लोग और तुम्हारे मानव और तुम्हारे जिन्न सब के सब एक मैदान में खड़े हों और मुझसे मांगने लगें और मैं हर एक को जो वह मांगे दूं, तो इससे जो कुछ मेरे पास है उसमें कोई कमी न होगी। किन्तु बस उतनी जितनी समुद्र में सुई डालकर निकाल लेने से समुद्र के पानी में कमी होती है। हे मेरे बन्दो, ये तो तुम्हारे ही कर्म हैं जिनको मैं तुम्हारे लिए गिनता रहता हूं। फिर तुम्हें उनका पूरा-पूरा बदला दूंगा। अतः जो व्यक्ति अच्छा बदला पाये तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह की प्रशंसा करे और जो इसके विपरीत (बुरा बदला) पाये तो वह केवल अपने आपको मलामत करे।" — मुस्लिम

५.हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह क़े रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "हे मेरे बन्दो, तुम में से हर एक गुमराह है सिवाय उसके जिसे मैंने राह दिखायी। अतः तुम मुझसे मार्ग-दर्शन की याचना करो, मैं तुम्हारा मार्ग-दर्शन करूंगा। तुममें से हर एक निर्धन है सिवाय उसके जिसको मैं धनवान और बेपरवाह कर दूं। अतः तुम मुझसे मांगो मैं तुम्हें रोज़ी दूंगा। तुममें से हर एक गुनाहगार है सिवाय उस व्यक्ति के जिसे मैंने बचा लिया। अतः तुममें से जो व्यक्ति यह जानता है कि मुझे क्षमा करने और बख़्शने की सामर्थ्य प्राप्त है फिर वह मुझसे क्षमा और बख़्शिश के लिए प्रार्थना करता है। मैं उसे क्षमा कर देता हूं और गुनाह क्षमा करने में कुछ परवाह नहीं करता। और यदि तुम्हारे अगले और पिछले और तुम्हारे मरे हुए

और जीवित लोग और तुम्हारे कमज़ोर और बलवान सबके सब मेरे परहेज़गार बन्दों में से किसी एक व्यक्ति के डर रखने वाले दिल की तरह हो जायें तो इससे मेरे राज्य में एक मच्छर के पंख के बराबर भी अभिवृद्धि नहीं हो सकती। और अगर तुम्हारे अगले और पिछले और तुम्हारे मरे हुए और जीवित लोग और तुम्हारे कमज़ोर और बलवान सबके सब मेरे बदनसीब बन्दों में से किसी व्यक्ति के दिल की तरह हो जायें, तो इससे मेरे राज्य में एक मच्छर के पंख के बराबर भी कमी नहीं हो सकती। और यदि तुम्हारे अगले और पिछले, मरे हुए और जीवित लोग और कमज़ोर और बलवान सबके सब एक मैदान में इकट्ठा हो जायं। फिर हर एक मनुष्य अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए मुझसे प्रार्थना करे और मैं हर एक मांगने वाले की मांग पूरी कर दूं, तो इससे मेरे राज्य और ख़ज़ाने में कोई कमी न होगी। यह तो बात ऐसी होगी जैसे तुममें से कोई समुद्र पर से गुज़रते हुए एक सुई समुद्र में डालकर फिर उसे उठा ले। यह इसलिए कि मैं अत्यन्त दानशील यशस्वी हूं। जो चाहता हूं करता हूं। मेरा देना कलाम और मेरा अज़ाब भी कलाम है। जब मैं किसी चीज़ का इरादा करता हूं, तो मैं बस यह कहता हूं कि हो जा और वह हो जाती है।" —तिरमिज़ी, अहमद, इब्न माजह

६. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि जब कोई बन्दा गुनाह करने के बाद कहता है कि हे अल्लाह, मेरे गुनाह को क्षमा कर दे, तो अल्लाह तआला कहता है: "क्या मेरा बन्दा यह जानता है कि उसका कोई रब है? जो गुनाह बख़्शता है और गुनाह पर पकड़ता भी है। मैंने अपने बन्दे को क्षमा कर दिया।" फिर जब तक अल्लाह चाहता है बन्दा गुनाह से बचा रहता है फिर यह बन्दा गुनाह कर बैठता है

और क्षमा-याचना करता है कि मेरे रब, मुझसे गुनाह हो गया, तू क्षमा कर दे। अल्लाह तआला कहता है: "क्या मेरा बन्दा यह जानता है कि उसका कोई रब है? जो गुनाह बख़्शता है और गुनाह पर सज़ा भी देता है। मैंने अपने बन्दे को क्षमा कर दिया।"

इसके बाद कुछ समय तक जिसको अल्लाह तआला ही जानता है, वह गुनाह से बचा रहता है। फिर वह गुनाह कर बैठता है और कहता है कि हे मेरे रब, मुझसे गुनाह हो गया, तू उसको क्षमा कर दे। फिर अल्लाह तआला कहता है: "क्या मेरा बन्दा यह जानता है कि उसका कोई रब है? जो गुनाह को बख़्श देता है और गुनाह पर अज़ाब भी देता है। मैंने उस बन्दे को बख़्श दिया। उसका जो जी चाहे करे।" — बुख़ारी, मुस्लिम

७. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "मैं ज़मीन वालों पर उनके गुनाहों के कारण किसी समय अज़ाब (यातना) उतारने का इरादा करता हूं किन्तु जो लोग मेरे घरों (मस्जिदों) को आबाद रखते हैं और रात के पिछले हिस्से में क्षमा-याचना किया करते हैं उन्हें देखकर अज़ाब का इरादा त्याग देता हूं और अज़ाब को धरती वालों से लौटा देता हूं।" —बैहक़ी

८. हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला ने नेकियां और बुराइयां लिख दी हैं फिर उन नेकियों और बुराइयों को अपनी किताब में भी लिख दिया है। अतः जो व्यक्ति किसी नेकी का दृढ़ संकल्प कर ले किन्तु वह नेकी वह व्यक्ति कर न सके तब भी अल्लाह तआला उसकी एक पूरी नेकी लिख देता है। और यदि संकल्प के बाद वह नेकी कर भी ले तो फिर अल्लाह तआला उसके लिए दस नेकियों

से लेकर सात सौ तक बल्कि उससे भी ज़्यादा लिखता है। और जो व्यक्ति किसी बुराई का इरादा करता है किन्तु उसको करता नहीं, तो उसके लिए भी अल्लाह तआला एक पूरी नेकी लिख देता है और यदि बुराई का इरादा करके वह व्यक्ति बुराई और गुनाह कर लेता है तो अल्लाह तआला केवल एक गुनाह लिखता है।

— बुख़ारी, मुस्लिम

९. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब कोई बन्दा गुनाह का इरादा करता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देता है: "जब तक वह व्यक्ति कोई गुनाह न करे तब तक केवल इरादे के कारण उसके कर्म-पत्र पर कोई गुनाह न लिखा जाय और यदि उससे गुनाह हो जाय तो केवल एक गुनाह लिखा जाय। और यदि वह अपना इरादा मेरे भय से त्याग दे तो उसके कर्म-पत्र में एक नेकी लिख दी जाय और यदि वह किसी नेकी का इरादा करे तो यद्यपि वह बन्दा वह नेकी करे नहीं तब भी केवल इरादे के कारण उसके कर्म-पत्र में एक नेकी लिख दो। और यदि संकल्प के बाद बन्दा वह नेकी कर ले, तो दस नेकियों से सात सौ नेकियां तक उसके कर्म-पत्र में लिखो।"

— बुख़ारी, मुस्लिम

१०. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यह भी रिवायत है कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "जब मेरा बन्दा इरादा करता है और अपने दिल में किसी नेकी करने का ख़याल लाता है, तो जब तक वह नेकी न करे मैं एक नेकी उसके कर्म-पत्र में लिख देता हूं। और जब वह नेकी कर लेता है तो मैं उसकी नेकी को दस गुना करके लिखता हूं। और जब कोई बन्दा किसी गुनाह का इरादा करता है तो जब तक वह

गुनाह न करे मैं उसको क्षमा कर देता हूं। और जब वह गुनाह कर लेता है तो मैं एक गुनाह को एक ही गुनाह लिखता हूं। और यदि वह गुनाह न करे केवल इरादा करके अपने ख़याल को त्याग दे तब भी मैं एक नेकी लिखता हूं, क्योंकि उसने गुनाह को मेरे भय से त्याग दिया।"
— मुस्लिम

११. हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला क़ियामत में मोमिन (आस्थावान) को अपने क़रीब करेगा और उसे अपने पहलू में ले लेगा। और उससे उसके गुनाहों का इक़रार करायेगा और पूछेगा: "क्या तूने वह और वह गुनाह किये थे?" बन्दा कहेगा कि हां मेरे रब, मैंने ये कर्म किये थे और यह बन्दा अपने दिल में ख़याल करेगा कि मैं तबाह हो गया। अल्लाह तआला कहेगा: "मैंने दुनिया में तेरे ऐबों को ढांके रखा और आज भी मैं तुझे बख़्श दूंगा।" फिर उसका कर्म-पत्र उसके दायें हाथ में दे दिया जायेगा और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों (धर्म विरोधियों और कपटाचारियों) के सम्बन्ध में खुल्लमखुल्ला घोषित किया जायेगा कि ये वे लोग हैं जो अल्लाह तआला पर थोपकर झूठ बोले थे। जान लो कि अल्लाह की फिटकार है ऐसे अत्याचारियों पर।
— अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम, नसई, इब्न माजह

१२. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब कोई बन्दा कहता है कि हे मेरे रब, हालांकि वह गुनाह कर चुका होता है, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि हे रब, यह इसके योग्य नहीं है। किन्तु अल्लाह तआला कहता है: "मेरे लायक़ तो यह बात है कि मैं इसे बख़्श दूं।"
—तिरमिज़ी

अल्लाह के लिए प्रेम और अल्लाह के लिए वैर

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला कहेगा: "कहां हैं वे लोग जो लोग मेरे प्रताप और प्रतिष्ठा के कारण आपस में एक-दूसरे से प्रेम किया करते थे? आज मैं उन्हें अपनी छाया में रखूंगा। आज मेरी छाया के अतिरिक्त कहीं कोई छाया नहीं।" — मुस्लिम, बुख़ारी, मालिक

२. हज़रत इरबाज़ बिन सारियह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरे प्रताप एवं प्रतिष्ठा के कारण परस्पर प्रेम करने वाले उस दिन अर्श (ईश सिंहासन) की छाया में होंगे जिस दिन मेरी छाया के अतिरिक्त कहीं कोई छाया न होगी।" — अहमद

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि यदि एक व्यक्ति पश्चिम में हो और दूसरा पूर्व में और ये दोनों आपस में अल्लाह के लिए प्रेम करते हों, तो अल्लाह तआला इन दोनों को क़ियामत के दिन एक जगह करके (हर एक से) कहेगा: "यह है वह व्यक्ति जिससे तू प्रेम करता था।" — बैहक़ी

४. हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत है। वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते सुना है कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरे प्रेम के पात्र वही लोग हैं जो मेरे

कारण आपस में प्रेम करते थे। और मेरे ही कारण आपस में उठते-बैठते थे1 और मेरे ही कारण एक-दूसरे के पास मिलने और दर्शनार्थ जाया करते थे। और मेरे ही कारण एक-दूसरे पर अपना माल ख़र्च करते थे।" — मालिक

५. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से प्रेम करता है तो हज़रत जिब्रील अ० से कहता है: "हे जिब्रील, मैं अमुक व्यक्ति से प्रेम करता हूं तुम भी उससे प्रेम करो।"

हज़रत जिब्रील अ० उससे प्रेम करते हैं। फिर हज़रत जिब्रील अ० आकाशों में घोषणा करते हैं कि अल्लाह तआला कहता है: "मैं अमुक व्यक्ति से प्रेम करता हूं। हे आकाश वालो, तुम भी उस बन्दे से प्रेम करो।"

अतः आकाश के रहने वाले भी उससे प्रेम करने लगते हैं। फिर धरती में उसकी लोकप्रियता फैला दी जाती है।

और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से अप्रसन्न होता है तो हज़रत जिब्रील अ० से कहता है: "हे जिब्रील, मैं अमुक व्यक्ति से नफ़रत करता हूं। मुझे उससे वैर है। तुम भी उससे वैर रखो।"

हज़रत जिब्रील अ० उस व्यक्ति से वैर रखते हैं। फिर आकाशों में घोषणा करते हैं कि अमुक व्यक्ति से अल्लाह तआला को बैर है। हे आकाशवालो, तुम भी उससे नफ़रत करो और उससे वैर रखो।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि आकाशवाले भी उससे वैर रखने लगते हैं। फिर धरती में उसके प्रति नफ़रत और अदावत फैला दी जाती है। — मुस्लिम

मुसीबत में धैर्य का महत्व

१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते हुए सुना कि अल्लाह तआला कहता है: "मैं अपने बन्दे की दो प्यारी चीज़ें लेकर उसे परीक्षा में डालता हूं और वह धैर्य से काम लेता है, तो मैं उनके बदले में उसे जन्नत देता हूं।" — बुख़ारी

२. हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब किसी बन्दे का बेटा मर जाता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से पूछता है: "तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह ग्रस्त की?" फ़रिश्ते इसका उत्तर हां में देते हैं। अल्लाह कहता है: "तुमने उसके दिल का फल तोड़ लिया?" फ़रिश्ते फिर इसका उत्तर हां में देते हैं। वह कहता है: "इस पर मेरे बन्दे ने क्या कहा?" फ़रिश्ते कहते हैं कि तेरे बन्दे ने तेरी प्रशंसा की, अल्हमदुलिल्लाह[1] कहा और इन्हा लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन[2] पढ़ा। अल्लाह तआला कहता है: "मेरे इस बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बना दो और उसका नाम बैतुलहम्द रखो।" — तिरमिज़ी, अहमद

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरे उस

---

१. सब प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है।

२. हम अल्लाह ही के हैं और हमें अल्लाह ही के पास लौटकर जाना है।

बन्दे के लिए मेरे पास जन्नत से कम कोई बदला नहीं है कि मैं दुनिया वालों में से उसके घनिष्ठ मित्र को उठा लूं और वह इस पर मेरे लिए सब्र करे।" — बुख़ारी

४. हज़रत सद्दाद बिन औस रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते हुए सुना है कि प्रतापवान अल्लाह कहता है: "मैं जब अपने मोमिन बन्दों में से किसी बन्दे को किसी आज़माइश में डालता हूं और वह मेरी तारीफ़ करता है, वह अपने बिस्तर से ख़ताओं से ऐसा पाक-साफ होकर खड़ा होता है जैसे उसी दिन उसकी माता ने उसे जन्म दिया।" और बरकत वाला महान रब (फ़रिश्तों से) कहता है: "मैंने अपने बन्दे को बीमारी के कारण रोक दिया है और वह वे कर्म नहीं कर सकता जो वह करता रहा है किन्तु तुम उसके लिए वह सवाब लिखते रहो जो उसके स्वास्थ होने की हालत में लिखते रहे हो।" — अहमद

बीमारपुर्सी का महत्व

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन (किसी बन्दे से) कहेगा: "हे आदम के बेटे, मैं बीमार हुआ तूने मेरी बीमारपुर्सी नहीं की।" वह बन्दा कहेगा कि हे रब, मैं तेरी बीमारपुर्सी कैसे करता तू तो सारे जगत् का रब है? वह कहेगा: "क्या तू नहीं जानता था कि मेरा अमुक बन्दा बीमार है तूने उसकी बीमारपुर्सी नहीं की? क्या तू नहीं जानता था कि अगर तू उसकी बीमारपुर्सी करता, तो अवश्य ही तू मुझे उसके पास पाता। हे आदम के बेटे, मैंने तुझसे खाना मांगा लेकिन तूने मुझे खाना नहीं खिलाया।" बन्दा कहेगा—हे रब, मैं तुझे खाना कैसे खिलाता तू तो जगत का रब है। वह कहेगा: "क्या तुझे नहीं मालूम कि मेरे अमुक बन्दे ने तुझसे खाना मांगा लेकिन तूनें उसे खाना नहीं खिलाया। क्या तूने यह बात न जानी कि अगर तूने उसे खिलाया होता, तो उस (के सवाब) को मेरे पास पाता। हे आदम के बेटे, मैंने तुझसे पानी मांगा लेकिन तूने मुझे पानी न पिलाया।" बन्दा कहेगा—हे रब, मैं तुझे कैसे पानी पिलाता तू तो सारे जगत् का रब है। वह कहेगा: "मेरे अमुक बन्दे ने तुझसे पानी मांगा लेकिन तूने उसे न पिलाया। अगर तू उसे पानी पिलाता तो उस (के सवाब) को मेरे पास पाता।" — मुस्लिम

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब कोई मुसलमान अपने किसी बीमार भाई की

बीमारपुर्सी करता है या उससे मुलाक़ात करता है तो अल्लाह तआला कहता है: "तुझे मुबारक हो और तेरा यह चलना मुबारक है। तूने अपना घर जन्नत में बना लिया।" — तिरमिज़ी

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० एक बीमार की बीमारपुर्सी के लिए गये (जो ज्वर से पीड़ित था)। आपने कहा—तुझे ख़ुशख़बरी हो। अल्लाह तआला कहता है: "यह ज्वर मेरी आग है। मैं अपने मोमिन बन्दे पर दुनिया में इसको डाल देता हूं ताकि दोज़ख़ की आग का बदला हो जाय और क़ियामत में उसको आग की तकलीफ़ न हो।"

— अहमद, इब्न माजह, बैहक़ी

मुस्लिम समुदाय की महानता

१. हज़रत इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि तुम्हारी जीवन-अवधि पिछले समुदायों की अपेक्षा ऐसी है जैसे अस्र के समय से सूर्य डूबने तक का समय होता है। और यहूदियों और ईसाइयों के मुक़ाबले में तुम्हारी मिसाल ऐसी है, जैसे किसी व्यक्ति ने कुछ मज़दूरों को काम पर लगाया और कहा कि कौन दोपहर तक एक-एक कीरात पर काम करेगा? अतएव यहूदियों ने दोपहर तक एक-एक कीरात पर काम किया। फिर उसने कहा, कौन है जो अस्र के समय तक एक-एक कीरात पर काम करे? सो ईसाइयों ने दोपहर से लेकर अस्र के समय तक काम किया। फिर उसने कहा कि कौन है जो अस्र से सूर्यास्त तक दो-दो कीरात के बदले में मेरा काम करेगा? जान लो कि ये तुम (मुस्लिम लोग) हो, जिन्होंने अस्र से सूर्यास्त तक कार्य किया। सुन लो, तुम्हारे लिए दोहरा बदला है। इस पर यहूदी और ईसाई बिगड़ गये और कहा कि हमारा कार्य अधिक है और मज़दूरी कम है। अल्लाह ने कहा: "क्या मैंने तुम्हारे साथ कोई अन्याय किया है कि तुम्हारे हक़ में कोई कमी की हो।" उन्होंने कहा कि नहीं। अल्लाह ने कहा: "फिर यह तो फ़ज़्ल (अनुग्रह) है जिसे चाहूं प्रदान करूं।"

— बुख़ारी

२. हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि मुसलमानों, यहूदियों और ईसाइयों की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक व्यक्ति ने एक क़ौम को निश्चित मज़दूरी पर रात तक के लिए कार्य पर लगाया। उस क़ौम के लोगों

ने दोपहर तक उसका काम किया। फिर कहने लगे-हमें तुम्हारी मज़दूरी की ज़रूरत नहीं जो तुमने हमारे लिए निश्चित की थी। और हमने जो कुछ काम किया अकारथ हुआ। उसने कहा: " ऐसा न करो, अपना शेष कार्य पूरा कर लो और अपनी पूरी मज़दूरी ले लो।" उन्होंने इनकार किया और काम छोड़कर चले गये। उनके बाद उसने दूसरे लोगों को मज़दूरी पर लगाया और कहा कि तुम शेष दिन पूरा काम कर दो, जो मज़दूरी मैंने उनके लिए निश्चित की थी वह तुम्हें मिलेगी। उन्होंने काम किया, यहां तक कि जब अस्र की नमाज़ का समय हुआ तो बोले कि हमने तुम्हारा जो काम किया, वह अकारथ हुआ और तुमने जो मज़दूरी हमारे लिए निश्चित की थी और हमने तुम्हें छोड़ दिया। उसने कहा: "तुम अपना शेष काम पूरा कर दो, बस अब तो बहुत थोड़ा वक़्त रह गया है।" उन्होंने इनकार किया। फिर उसने दूसरे लोगों को मज़दूरी पर लगाया जो शेष दिन कार्य करें। उन्होंने कार्य किया और दोनों गरोहों की पूरी मज़दूरी भी ले ली। यह है मिसाल उनकी और मिसाल उस प्रकाश की जिसे उन्होंने स्वीकार किया।

— बुख़ारी

आपके सहाबा (साथी) रज़ि०

१. हज़रत बुरीदह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला ने मुझे चार व्यक्तियों से प्रेम करने का हुक्म दिया है[1] और कहा है, कि वह भी उन चारों से प्रेम करता है। किसी ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल उनका नाम बता दीजिए। आपने कहा कि उन चारों में एक अली हैं। आपने तीन बार हज़रत अली का नाम लिया। फिर कहा अबू ज़र, मिक़दाद और सलमान। अल्लाह ने मुझको इनसे प्रेम करने का हुक्म दिया है और मुझको ख़बर दी है कि उसको भी ये प्रिय हैं। — तिरमिज़ी

२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उबैय बिन कअब रज़ि० से कहा कि अल्लाह तआला ने मुझको हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाऊं। उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने मेरा नाम लेकर आपसे कहा है? आपने कहा कि हां, तुम्हारा नाम लेकर मुझसे कहा है। यह सुनकर उबैय बिन कअब रोने लगे। — मुस्लिम

---

१. अर्थात अल्लाह ने जिन लोगों से मुझे प्रेम करने का हुक्म दिया है उनमें ये चार व्यक्ति शामिल हैं।

क़ुरआन पढ़ने का महत्व

१. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि बरकत वाला सर्वोच्च रब कहता है: "जिस किसी को क़ुरआन ने व्यस्त रखा और उसे इतनी फ़ुर्सत न दी कि वह मेरा ज़िक्र करता या मुझसे मांगता, मैं उसे उससे बेहतर और बढ़कर दूंगा जो मांगने वालों को देता हूं।" दूसरे कलामों के मुक़ाबले में अल्लाह तआला के कलाम की श्रेष्ठता ऐसी है जैसे खुद अल्लाह की श्रेष्ठता उसकी पैदा की हुई चीज़ों के मुक़ाबले में है। — तिरमिज़ी, बैहक़ी-शोअबउलईमान

२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि: "(क़ियामत के दिन) क़ुरआन वाले व्यक्ति से कहा जायेगा कि पढ़ते जाओ और चढ़ते जाओ और उसी तरह संभाल-संभालकर (क़ुरआन) पढ़ो जिस तरह दुनिया में संभाल-संभाल कर पढ़ते थे, इसलिए कि तुम्हारा स्थान तुम्हारी तिलावत (पठन) की आख़िरी आयत पर होगा।"

— तिरमिज़ी, अबू दाऊद, इब्न माजह

नमाज़

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि तुम में रात और दिन के फ़रिश्ते आगे और पीछे आते रहते हैं और फ़ज्र और अस्र की नमाज़ में उनका सम्मिलन होता है। फिर जो फ़रिश्ते रात को तुम्हारे साथ रहते हैं वे आसमान पर चले जाते हैं। अल्लाह तआला उनसे पूछता है: "तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा?" वे कहते हैं जब हम उनके पास गये तो वे नमाज़ पढ़ रहे थे और जब उनको छोड़कर आये तब भी उन्हें नमाज़ पढ़ता हुआ छोड़कर आये।

— बुख़ारी, मुस्लिम

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते हुए सुना कि क़ियामत के दिन सबसे पहले बन्दे से जिस चीज़ का हिसाब लिया जायेगा वह नमाज़ है। अगर नमाज़ ठीक निकली तो वह सफल होगा और छुटकारा पा जायेगा और अगर नमाज़ में ख़राबी निकली तो वह असफल हुआ और घाटे में पड़ा। फ़र्ज़ की अदायगी में अगर उससे कोताही हुई होगी तो प्रतापवान रब कहेगा: "देखो, मेरे बन्दे के पास कुछ नफ़्ल नमाज़ें हैं?" यदि हैं तो फ़र्ज़ की कमी को उन नफ़्ल नमाज़ों के द्वारा पूरी कर दी जायेगी। फिर उसके तमाम कर्मों के साथ भी यही मामला होगा।

— तिरमिज़ी, अबू दाऊद, नसई, अहमद, इब्न माजह

३. हज़रत उक्बह बिन आमिर रज़ि० कहते है कि मैंने

अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते हुए सुना कि तुम्हारे रब को पहाड़ की चोटी पर भेड़े चराने वाला वह चरवाहा बहुत भला और अच्छा लगता है जो (नमाज़ के समय वहां) अज़ान देता है और नमाज़ पढ़ता है। अल्लाह तआला कहता है: "मेरे इस बन्दे को देखो, वह अज़ान देता है और नमाज़ क़ायम करता है, मुझसे डरता है। मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया।" — नसई

४. हज़रत अब्दुरहमान बिन आइश और इब्न अब्बास और मुआज़ बिन जबल रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि मैंने अपने प्रतापवान रब को सपने में बहुत ही अच्छी सूरत में देखा। उसने कहा: "ऐ मुहम्मद, क्या तुम जानते हो कि मलये आला (उंचे दरबार वाले फ़रिश्ते) किस बात में झगड़ रहे हैं?" मैंने कहा हां, गुनाह को दूर करने वाली चीज़ों के विषय में और गुनाह को दूर करने वाली चीज़ें ये हैं—मस्जिद में नमाज़ के बाद ठहरा रहना और जमातों के लिए पैदल चलना और नागवार हालतों में पूरा-पूरा वुज़ू करना और जिसने ऐसा किया वह भलाई के साथ जिया और भलाई के साथ मरा और वह अपने में ऐसा पाक हो जायेगा जैसे आज ही उसकी मां ने उसे जन्म दिया। और अल्लाह ने कहा: "ऐ मुहम्मद, जब तुम नमाज़ पढ़ लो, तो यह दुआ पढ़ो। हे अल्लाह, मैं तुझसे मांगता हूं कि मैं अच्छे कर्म करूँ और बुराइयों को छोड़ दूं और मोहताजों से प्रेम करूँ और जब तू अपने बन्दों को फ़ित्ने में डालने का इरादा करे, तो मुझे अपनी तरफ़ उठा ले इस हालत में कि मैं फ़ित्ने में न पड़ा हुआ हूं। और अल्लाह ने कहा: "और ऊंचे दर्जों की चीज़ें ये हैं—सलाम को फैलाना (रिवाज देना), खाना खिलाना और रात में नमाज़ पढ़ना जबकि लोग सो रहे हों।" — मसाबीह, शरहुस-सुन्नह

५. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "जिस किसी ने मेरे वली (प्रिय व्यक्ति) से दुश्मनी की उसके विरुद्ध मेरी तरफ़ से लड़ाई का एलान है। मेरा बन्दा मेरा सामीप्य किसी दूसरे काम से जो मुझे पसन्द हो उतना प्राप्त नहीं कर सकता जितना उस कर्म से प्राप्त कर सकता है जो मैंने उस पर फ़र्ज़ किया है। मेरा बन्दा नफ़्लों के द्वारा मेरा सामीप्य बराबर ढूंढता रहता है यहां तक कि मैं उससे प्रेम करने लगता हूं। और जब मैं उससे प्रेम करने लगता हूँ, तो मैं उसका वह कान हो जाता हू जिससे वह सुनता है, उसकी वह आंख हो जाता हू जिससे वह देखता है, उसका वह हाथ हो जाता हूं जिससे वह पकड़ता है और उसका वह पांव हो जाता हूं जिससे वह चलता है। अगर वह मुझसे मांगेगा, तो मैं उसे अवश्य दूंगा और अगर वह मेरी पनाह में आना चाहेगा, तो अवश्य ही मैं उसे अपनी पनाह में ले लूंगा। और मुझे किसी काम के करने में जो मुझे करना है उतनी हिचकिचाहट नहीं होती जितनी हिचकिचाहट मुझे मोमिन की जान क़ब्ज़ करने में होती है। वह मौत को नापसन्द करता है और मुझे उसे कोई तकलीफ़ देनी पसन्द नहीं और मौत उसके लिए एक अटल चीज़ है।" — बुख़ारी

६. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते हुए सुना कि अल्लाह तआला कहता है: "नमाज़ मेरे और मेरे बन्दे के बीच आधी-आधी तक़सीम है। आधी नमाज़ मेरे लिए और आधी मेरे बन्दे के लिए है और मेरे बन्दे को वह मिलेगा जो वह मांगेगा।" जब बन्दा कहता है 'सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है' तो अल्लाह तआला कहता है कि: "मेरे बन्दे ने मेरी प्रशंसा की (और मेरा शुक्र अदा किया)" और जब वह कहता है 'जो कृपाशील और

दयावान है' तो अल्लाह कहता है कि: "मेरे बन्दे ने मेरी सराहना की।" और जब वह कहता है 'उस दिन का मालिक है जब कर्मों का बदला दिया जायेगा' तो अल्लाह कहता है कि: "मेरे बन्दे ने मेरी बड़ाई और महानता बयान की।" और जब वह कहता है 'हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझसे ही मदद मांगते हैं तो अल्लाह कहता है कि: "यह मेरे और मेरे बन्दे के बीच सम्मिलित रूप से है। और मेरे बन्दे को वह चीज़ मिलेगी जो उसने मांगी।" और जब वह कहता है 'मुझे सीधा मार्ग दिखा उन लोगों का मार्ग जो तेरे कृपा-पात्र हुए जो न प्रकोप-ग्रस्त हुए और न गुमराह हुए' तो अल्लाह कहता है कि: "यह मेरे बन्दे के लिए है और मेरे बन्दे को वह चीज़ मिलेगी जो उसने मांगी।"

— मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई, इब्न माजह, तिरमिज़ी

७. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "हे आदम के बेटे, तू मेरी इबादत के लिए फ़ुर्सत निकाल, तो मैं तेरे सीने (दिल को) बेपर्वाई (बेनियाज़ी) से भर दूंगा। तेरी मोहताजी को रोक दूंगा वरना तेरे हाथों को कार्य की अधिकता से भर दूंगा और तेरी मोहताजी को नहीं रोकूंगा।" — तिरमिज़ी, बैहक़ी

८. हज़रत अबू दरदा रज़ि० और हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "ऐ आदम के बेटे, मेरे लिए दिन के आरम्भ में चार रकअत (नमाज़) पढ़ तो मैं दिन के आख़िर तक तेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी हो जाऊंगा।"— तिरमिज़ी, अबू दाऊद, अहमद

रोज़ा और ईद

१. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "रोज़ा एक ढाल है। उस ढाल से बन्दा दोज़ख़ की आग से बचाया जाता है। रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा।"

— अहमद, बैहक़ी

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "बन्दों में से वह बन्दा मुझे सबसे अधिक प्रिय है जो रोज़ा खोलने में जल्दी करता है।"

— अहमद, तिरमिज़ी

३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा। बन्दा अपनी कामेच्छा को और अपने खाने-पीने को मेरे लिए छोड़ देता है। रोज़ा एक ढाल है और रोज़ेदार के हिस्से में दो ख़ुशियां हैं। एक ख़ुशी तो उसे उस समय मिलती है जब वह रोज़ा खोलता है और एक ख़ुशी उसे उस समय होगी जब वह अपने रब से मिलेगा। रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के यहां कस्तूरी की ख़ुशबू से ज़्यादा बेहतर है।"

— बुख़ारी, मुस्लिम, मालिक, तिरमिज़ी, नसई, इब्न माजह

४. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि आदम के बेटे के हर अमल (कार्य) का सवाब दस गुने से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है। अल्लाह तआला कहता है: "मगर रोज़े की बात और है क्योंकि रोज़ा मेरे ही लिए है और मैं

ही उसका बदला दूंगा। बन्दा अपनी कामेच्छा और अपने खाने को मेरे लिए छोड़ देता है। रोज़ेदार के लिए दो खुशियां हैं, एक खुशी तो रोज़ा खोलने के वक़्त होती है और एक अपने रब से मुलाक़ात करते वक़्त होगी। और रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है। अतः जब तुममें से किसी के रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात ज़बान पर लाये और न शोर मचाये। और अगर कोई उसे गाली दे या लड़े तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं।" — बुखारी, मुस्लिम

५. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनकी दुआ रद्द नहीं की जाती, एक रोज़ादार जब वह रोज़ा खोले, दूसरा न्यायशील इमाम (हाकिम), तीसरा जिस पर जुल्म हुआ हो। उसकी दुआ को जिस पर जुल्म हुआ हो, अल्लाह तआला बादलों के ऊपर उठा लेता है और आसमान के द्वार मज़लूम की दुआ के लिए खोल देता है। और कहता है: "मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम, मैं तेरी मदद करूंगा, यद्यपि यह मदद कुछ समय के बाद हो।" — तिरमिज़ी

६. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि 'लैलतुल क़द्र' (रमज़ान की एक शुभ रात्रि) में हज़रत जिब्रील अ० फ़रिश्तों की एक जमात के साथ उतरते हैं और जो बन्दे अल्लाह तआला के ज़िक्र में लगे होते हैं चाहे वे खड़े होकर ज़िक्र कर रहे हों या बैठकर, ये फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं। फिर जब उनके ईद (ईदुलफित्र) का दिन अर्थात उनके रोज़ा खोल देने का दिन होता है, तो अल्लाह तआला अपने बन्दों के कामों पर गर्व करता हुआ फ़रिश्तों से कहता है: "ऐ मेरे फ़रिश्तो, जब कोई मज़दूर अपना काम पूरा कर ले तो उसका बदला क्या है?" वे कहते हैं ऐ हमारे रब, उस मज़दूर का बदला

यह है कि उसे उसकी पूरी मज़दूरी दे दी जाय। अल्लाह कहता है: "मेरे फ़रिश्तो, मेरे गुलामों और मेरी लौंडियों ने मेरा फ़र्ज़ जो उन पर था अदा कर दिया फिर दुआ के शब्द पुकारते हुए निकले। मुझे मेरी इज़्ज़त, मेरे प्रताप और मेरी उदारता और शराफ़त और मेरी उच्चता और मेरे ऊंचे मरतबे की क़सम, निश्चय ही मैं इनकी दुआ को कुबूल करूंगा।" फिर वह कहता है: "लौट जाओ मैंने तुम्हें बख़्श दिया और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदल दिया।" आप सल्ल० कहते हैं कि वे इस हाल में लौटते हैं कि बख़्शिश हो चुकी होती है। — बैहक़ी-शोअबउलईमान

सदक़ा – ख़ैरात

१. हजरत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह कहता है: "ऐ आदम के बेटे, (तुम अल्लाह की राह में अपना माल) ख़र्च करो, मैं तुम पर ख़र्च करूंगा।" – बुख़ारी, मुस्लिम

२. हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि तुमसे पहले के लोगों में एक आदमी ऐसा गुज़रा है जिसके पास कोई नेक अमल न था अलबत्ता वह लोगों से लेन-देन किया करता था। और वह खुशहाल था, वह अपने गुलामों से कहा करता था कि तंगदस्तों से दरगुज़र किया करो। आपने कहा कि अल्लाह ने कहा: "हमें तुमसे कहीं बढ़कर दरगुज़र से काम लेने का हक़ है। (उसने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि) इस व्यक्ति से दरगुज़र करो।" – मुस्लिम, बुख़ारी, नसई

३. हज़रत अबी बिन हातिम रज़ि० कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास था। दो आदमी आये। उनमें से एक तंगदस्ती और मोहताजी की शिकायत कर रहा था और दूसरा रास्तों में डाकाज़नी की शिकायत कर रहा था। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि जहां तक रास्तों की डाकाज़नी का मामला है, तो यह तुम्हारे लिए बस थोडे दिनों की बात है यहां तक कि एक दिन आयेगा कि काफ़िला बिना किसी निगाहबान के मक्का तक सफ़र करेगा। और रही बात तंगदस्ती और मोहताजी की, तो

क़ियामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि तुममें का एक व्यक्ति अपना सदक़ा लिये फिरेगा और कोई उसका सदक़ा क़ुबूल करने वाला उसे न मिलेगा। फिर तुममे का एक शख़्स (क़ियामत के दिन) अल्लाह के सामने इस तरह खड़ा होगा कि उसके और अल्लाह के दर्मियान कोई पर्दा न होगा। और न कोई तर्जुमान (प्रवक्ता) होगा जो उसकी तर्जुमानी करे। फिर अल्लाह उससे कहेगा: "क्या मैंने तुम्हें माल (धन-दौलत) नहीं दिया था?" वह कहेगा क्यों नहीं, दिया तो था। फिर अल्लाह उससे कहेगा: "क्या मैंने तुम्हारे पास रसूल नहीं भेजा था?" वह कहेगा क्यों नहीं भेजा तो था। फिर वह अपनी दाहिनी ओर देखेगा, तो आग के सिवा उसे कुछ दिखायी नहीं देगा। फिर वह अपनी बायीं ओर देखेगा, तो आग ही उसे दिखायी देगी। अतः तुममें से हर एक आग से बचने की कोशिश करे चाहे खजूर के एक टुकड़े के द्वारा ही सही। अगर यह भी उसे न प्राप्त हो, तो कोई अच्छी बात कहकर ही।

— बुख़ारी

हज

१. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि तेजोमय प्रतापवान अल्लाह कहता है: "मैंने बन्दे को शारीरिक स्वास्थ्य दिया और उसे रोज़ी में कुशादगी दी, पांच वर्ष गुज़र गये और वह मेरी तरफ़ नहीं आया, तो वह बेनसीब है।" — बैहक़ी

२. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि कोई ऐसा दिन नहीं है जिसमें उससे अधिक लोग दोज़ख़ से आज़ाद किये जाते हों जितना 'अरफ़ह'[1] के दिन आज़ाद किये जाते हैं। अल्लाह अपने बन्दों से बहुत क़रीब हो जाता है और अपने फ़रिश्तों के सामने गर्व करता है और कहता है: "इन लोगों का इरादा क्या है?" — मुस्लिम

३. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि जब 'अरफ़ह' का दिन होता है, तो अल्लाह दुनिया के आसमान (क़रीबी आसमान) की तरफ़ अवतरित होता है। फिर हाजियों पर फ़रिश्तों के सामने गर्व करता है और कहता है: "देखो, मेरे बन्दों की तरफ़ कि वे मेरे पास इस हाल में दूर-दूर से आये हैं कि उनके बाल बिखरे हुए और धूल से अटे हैं और (मुझे) पुकार रहे हैं। मैं तुम्हें इस पर गवाह बनाता हूं कि मैंने इनको बख़्श दिया।" फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ रब, फ़लां व्यक्ति गुनाहगार है और फ़लां औरत और मर्द भी। अल्लाह के रसूल

---

१. ज़िलहिज्जा के महीने की नवीं तारीख़।

सल्ल० कहते हैं कि अल्लाह तआला कहता है: "मैं तो इन्हें बख़्श चुका।" अल्लाह के रसूल सल्ल० कहते हैं कि 'अरफ़ह' के सिवा कोई और दिन ऐसा नहीं है जिसमें इस दिन से बढ़कर बड़ी संख्या में लोग दोज़ख़ से आज़ाद किये जाते हों। — शरहुस-सुन्नह

जिहाद

१. हज़रत इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरे बन्दों में से जो बन्दा अल्लाह की राह में जिहाद के उद्देश्य से निकलता है, मैं उसके लिए दो बातों की ज़मानत लेता हूं। अगर उसको वापस लाऊंगा तो उसको सवाब या ग़नीमत के माल[1] के साथ वापस लाऊंगा। और अगर उसे क़ब्ज़ कर लूंगा (अर्थात मौत दे दूंगा), तो उसे बख़्श दूंगा और उस पर दया दर्शाऊंगा।" — नसई

२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि एक व्यक्ति जन्नत वालों में से लाया जायेगा। अल्लाह तआला उससे कहेगा: "ऐ आदम के बेटे, तुमने अपना ठिकाना कैसा पाया?" वह कहेगा कि ऐ रब, बहुत ही अच्छा ठिकाना। अल्लाह कहेगा: "मांगो और अपनी कामना प्रकट करो।" वह कहेगा कि मेरी मांग यह है कि मुझे दुनिया में लौटा दिया जाय कि मैं तेरी राह में दस बार क़त्ल किया जाऊं। यह बात वह शहीद होने की फ़ज़ीलत और बड़ाई देखकर कहेगा। — नसई

३. हज़रत मसरूक़ रज़ि० कहते हैं कि हमने या मैंने अब्दुल्लाह इब्न मसऊद रज़ि० से आयत "जो लोग अल्लाह की

---

१. धर्मयुद्ध में शत्रु के जिस माल पर क़ब्ज़ा होता है उसे ग़नीमत का माल कहते हैं।

राह में मारे गये उनको मुर्दा न समझो बल्कि वे ज़िन्दा हैं अपने रब के पास रोज़ी पाते हैं" का मतलब पूछा। उन्होंने कहा हमने इसका मतलब (अल्लाह के रसूल सल्ल० से) पूछा था, तो आपने कहा कि शहीदों की आत्माएं हरे रंग की चिड़ियों में रहती हैं। उनके लिए अर्श से लटकी हुई कंदीलें हैं। ये आत्माएं जन्नत में जहां चाहती हैं सैर करती फिरती हैं, फिर इन कंदीलों में वापस आकर ठहरती हैं। उनका रब उनकी ओर रुख़ करके कहता है: "तुम किस चीज़ की इच्छा रखते हो?" वे शहीद कहते हैं, हम किस चीज़ की इच्छा प्रकट करें जबकि हम जन्नत में जहां चाहते हैं जाते हैं? अल्लाह उनसे तीन बार इसी प्रकार का सवाल करता है। जब वे यह देखते हैं कि उनसे सवाल का सिलसिला जारी है, तो वे कहते हैं ऐ रब, हम चाहते हैं कि हमारी आत्माओं को हमारे बदन में फिर लौटा दिया जाय ताकि हम तेरी राह में दोबारा क़त्ल किये जायं। फिर ज़ब अल्लाह देखता है कि उनको किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, तो उन्हें छोड़ देता है। — मुस्लिम

४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि तुम्हारा रब दो आदमियों से बहुत ख़ुश होता है। एक तो वह आदमी जो अपने नर्म बिस्तर और लिहाफ़ से और अपनी प्यारी पत्नी के पास से नमाज़ के लिए उठा। अल्लाह अपने फ़रिश्तों से कहता है: "मेरे बन्दे को देखो, जो मेरे पास की चीज़ों (जन्नत और सवाब) के शौक़ में और मेरे पास की चीज़ों (दोज़ख़ और यातना) के डर से अपने फ़र्श और नर्म बिस्तर और अपनी प्रिया और पत्नी को छोड़कर अपनी नमाज़ अदा करने के लिए उठा है।"

और दूसरा आदमी वह जिसने अल्लाह की राह में जिहाद किया और अपने साथियों के साथ दुश्मन के मुक़ाबले से भाग

खड़ा हुआ, फिर उसने महसूस किया कि भागने में कितना गुनाह और लौटकर लड़ने में कितना सवाब है, तो वह लौट पड़ा और दुश्मन से लड़ा यहां तक कि शहीद हो गया। यह देखकर अल्लाह अपने फ़रिश्तों से कहता है: "मेरे बन्दे को देखो, जो मेरे पास की चीज़ों (जन्नत और सवाब) के शौक़ में और मेरे पास की चीज़ों (दोज़ख़ और यातना) के डर से (लड़ाई के मैदान में) लौट आया यहां तक कि अपनी जान दे दी।" — शरहुस-सुन्नह

लोगों के साथ

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि तीन आदमी ऐसे हैं जिनसे अल्लाह तआला न तो बात करेगा और न उनकी तरफ़ रहमत की नज़र करेगा। एक वह व्यक्ति जिसने ख़रीदार से किसी माल पर झूठी क़सम खाकर (ग्राहक से) कहा कि मुझे इस माल का इस क़ीमत से ज़्यादा मिल रहा था जो इस वक़्त लगायी गयी। दूसरा वह व्यक्ति जो अस्र की नमाज़ के बाद झूठी क़सम इसलिए खाता है कि इससे किसी मुसलमान का माल मार ले और तीसरा वह व्यक्ति जिसने ज़रूरत से बढ़कर पानी को रोक लिया। अल्लाह तआला कहेगा: "जिस तरह तुमने उस ज़रूरत से बढ़कर पानी को रोका जिसमें तेरी मेहनत का कोई दख़्ल न था, उसी तरह मैंने आज अपने फ़ज़्ल (कृपा) को तुझसे रोक लिया।" — बुख़ारी

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "तीन आदमी ऐसे हैं जिनसे क़ियामत के दिन मैं झगडूंगा। एक वह व्यक्ति जिसने मेरी क़सम खाकर वादा किया, फिर उसे तोड़ दिया। दूसरा वह व्यक्ति जिसने किसी आज़ाद आदमी को बेंचकर उसकी क़ीमत खा गया और तीसरा वह व्यक्ति जिसने एक मज़दूर को मज़दूरी पर लगाया और उससे पूरा-पूरा काम लिया लेकिन उसकी मज़दूरी उसको नहीं दी।" — बुख़ारी, इब्नमाजह, अहमद

३. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से रिवायत है। वे

कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते सुना कि अल्लाह तआला कहता है: "मैं अल्लाह हूं और मैं रहमान हूं। मैंने रिश्ते-नाते को पैदा किया और अपने नाम से उसका नाम निकाला। अतः जिस किसी ने उसको जोड़ा, मैं उसे जोडूंगा और जिसने उसे तोड़ा मैं उसे विच्छिन्न कर दूंगा।" – अबू दाऊद

४. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि एक व्यक्ति ने कोई अच्छा कर्म नहीं किया था, अलबत्ता वह लोगों को क़र्ज़ (ऋण) दिया करता था। जब वह अपने आदमी को (तक़ाज़े के लिए) भेजता, तो कहता था कि जो आसानी से वसूल हो जाय वह ले लेना। और जिसकी वसूली में मुश्किल पेश आये उसे छोड़ देना और दरगुज़र से काम लेना, शायद अल्लाह तआला हमसे भी दरगुज़र करे। जब उस व्यक्ति का देहान्त हुआ तो अल्लाह तआला ने कहा: "क्या तूने कोई नेक अमल किया है?" उसने कहा नहीं, अलबत्ता एक लड़का मेरा मुलाज़िम था, मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और जब उसे तक़ाज़े के लिए भेजता तो उसे कह दिया करता था कि जो आसानी से वसूल हो जाय वह ले लेना और जिसकी वसूली में मुश्किल पेश आये उसे छोड़ देना। और (तंग दस्त के मामले में) दरगुज़र से काम लेना, शायद अल्लाह तआला हमसे भी दरगुज़र करे। अल्लाह तआला ने कहा: "मैंने तुझसे दरगुज़र किया।" – नसई

ज्ञान का महत्व

१. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला ने मुझ पर यह "वह्य" की[१]: "जो व्यक्ति इल्म (सच्चे ज्ञान) की खोज में निकला मैं उसके लिए जन्नत का मार्ग सुगम कर दूंगा और जिसकी मैंने दो आंखें ले लीं,[२] तो इन आंखों के बदले मैं उसको जन्नत प्रदान करूंगा और इल्म की अधिकता इबादत की अधिकता से बेहतर है। और दीन (धर्म) की असल (जड़) तो परहेज़गारी है।" — बैहक़ी - शोअबुलईमान

---

१. अल्लाह तआला जिस सूक्ष्म और अदृश्य तरीक़े से अपना कलाम (वाणी) नबी पर उतारता है उसे वह्य कहते हैं।

२. अर्थात जिसकी दोनों आंखें जाती रहीं और वह अन्धा हो गया।

भलाई का हुक्म देना

१. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला ने जिबरील अ० को वह्य की कि: "ऐसे-ऐसे नगर को उसके निवासियों समेत उलट दो।" जिबरील ने कहा कि ऐ मेरे रब, उन लोगों में तो तेरा फ़लां बन्दा भी है जिसने एक क्षण के लिए भी तेरी अवज्ञा नहीं की। नबी सल्ल० कहते हैं कि इस पर अल्लाह ने कहा: "उस नगर को उस व्यक्ति पर और उन निवासियों पर उलट दो, क्योंकि उस व्यक्ति का चेहरा मेरे कारण एक घड़ी के लिए भी न बदला (लोगों की बुराइयां देखकर उसे तनिक भी चिन्ता न हुई और न उसे क्रोध आया)।"

— बैहक़ी

सुशीलता

१. हज़रत उबैदा बिन साबित रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरा प्रेम उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो मेरी राह में परस्पर एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, और मेरा प्रेम उपयुक्त है उन लोगों के लिए जो मेरी राह में एक-दूसरे से नाता जोड़ते हैं, और मेरा प्रेम उपयुक्त है उन लोगों के लिए जो मेरे लिए एक-दूसरे के हितैषी हैं, और मेरा प्रेम उपयुक्त है उन लोगों के लिए जो मेरी राह में एक-दूसरे से मुलाक़ात करते हैं, और मेरा प्रेम उपयुक्त है उन लोगों के लिए जो मेरी राह में आपस में एक-दूसरे पर ख़र्च करते हैं। मेरी राह में आपस में प्रेम करने वाले (क़ियामत के दिन) नूर के मेंबरों पर बैठेंगे और नबी और सिद्दीक़ (अत्यन्त सत्यवान लोग) उनके दर्जों की कामना करेंगे (अर्थात् उनके दर्जों की सराहना करेंगे)।"

— अहमद

२. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते सुना कि अल्लाह तआला कहता है: "मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब हो गयी जो मेरी राह में परस्पर एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, और जो मेरी राह में परस्पर एक-दूसरे के साथ बैठते हैं, और मेरी राह में परस्पर एक-दूसरे से मुलाक़ात करते हैं, और मेरी राह में एक-दूसरे पर ख़र्च करते हैं।"

— मुवत्ता

३. हज़रत सद्दाद बिन औस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह

के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ एहसान करने और भलाई करने को ज़रूरी ठहराया है (यहां तक) कि जब तुम्हें किसी को क़त्ल भी करना हो तो एहसान के साथ (भले तरीक़े से) क़त्ल करो और जब (जानवर को) ज़ब्ह करो तो अच्छे तरीक़े से ज़ब्ह करो और तुममें से हर व्यक्ति को चाहिए कि (ज़ब्ह करते वक़्त) छुरी को तेज़ कर ले और जानवर को आराम दे। — मुस्लिम

४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है: "निगाह इब्लीस (शैतान) के तीरों में से एक ज़हरीला तीर है जिसने मेरे डर से उसे त्याग दिया (अर्थात किसी पराई स्त्री पर निगाह नहीं डाली) तो मैं उसके ईमान में ऐसे गुण पैदा कर दूंगा जिसकी लज़्ज़त और मिठास वह अपने दिल में महसूस करेगा। — तबरानी

अपनी जान का हक़

१. हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा तुमसे पहले के लोगों में एक शख़्स था, वह बड़ी तकलीफ़ में था। उसने तकलीफ़ में बेसब्री दिखायी और छुरी ली और उससे अपने हाथ को काटा। ख़ून रुका नहीं यहां तक कि वह मर गया। अल्लाह तआला ने कहा: "मेरे बन्दे ने अपनी जान के मामले में जल्दी की, मैंने जन्नत उस पर हराम कर दी (वह जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता)।"

— बुख़ारी

क़ियामत

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन ज़मीन को समेट लेगा और आसमानों को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा और कहेगा: "मैं बादशाह हूं, कहां हैं ज़मीन के बादशाह।"
— बुख़ारी

२. हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला आसमानों को लपेट लेगा, फिर उनको अपने दाहिने हाथ में लेगा और कहेगा : "कहां हैं ज़ालिम ! कहां हैं सरकश ! फिर ज़मीनों को बायें हाथ में लेगा, एक दूसरी रिवायत में है कि ज़मीनों को दूसरे हाथ में लेगा फिर कहेगा, "मैं बादशाह हूं, कहां है सरकश और घमंडी।"
— मुस्लिम

३. हज़रत अबू मालिक अश्अरी रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है : "मैंने तीन चीज़ें अपने बन्दों से छुपा रखी हैं। अगर उन तीन चीज़ों को कोई व्यक्ति दुनिया में देख ले, तो कभी भी कोई गुनाह न करे:

अगर मैं अपने सामने से पर्दा हटा दूं और कोई व्यक्ति मुझको देख ले और जान ले कि मैं लोगों को मौत देने के बाद उनके साथ क्या करूंगा।

और किसी को यह बात मालूम हो जाय कि मैं किस प्रकार आसमानों और ज़मीनों को अपनी मुट्ठी में लेकर कहूंगा कि मैं

बादशाह हूं, मेरे सिवा किसी की बादशाही नहीं।

और मैं अपने बन्दों को जन्नत और मैंने उनके लिए जो सामान तैयार किया है, वह भी दिखा दूं और वे देखकर उसका यक़ीन कर लें। और मैं अपने बन्दों को दोज़ख़ (नरक) और जो अज़ाब मैंने ठहराया है, वह दिखा दूं और वे उसका यक़ीन कर लें।

किन्तु मैंने अपने इरादे से उन चीज़ों को छिपा लिया है, अलबत्ता इनका ज़िक्र उनसे कर दिया ताकि यह मालूम हो कि वे कैसे कर्म करते हैं।" — तबरानी

४. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा मेरी उम्मत के दो आदमी रब के सामने झगड़ते होंगे। एक कहेगा ऐ रब, मेरे इस भाई से मेरा वह हक़ दिला जो इसने ज़ुल्म करके मुझसे लिया था। अल्लाह तआला कहेगा: "यह किस तरह होगा, इस के पास तो कोई नेकी बाक़ी नहीं रही?" वह कहेगा ऐ रब, मेरे गुनाह इस पर लाद दे। नबी सल्ल० यह कहकर रोने लगे और आपकी आंखों में आंसू बहने लगे, फिर आपने कहा कि यह दिन ऐसा ही है कि लोग इस बात के बहुत मोहताज होंगे कि कोई उनके गुनाह को उठा ले और अपने ज़िम्मे ले ले।

अल्लाह तआला उस व्यक्ति से जिस पर ज़ुल्म हुआ था कहेगा: "अपनी निगाह ऊपर उठाकर देख।" जब वह निगाह उठाकर देखेगा, तो कहेगा ये सोने-चांदी के शहर और ये जवाहर के मकान कौन से नबी या कौन से सिद्दीक़ या कौन से शहीद के हैं? अल्लाह तआला कहेगा: "जो इनकी क़ीमत चुका दे ये उसके हैं।" वह कहेगा ऐ रब, इसका कौन मालिक हो सकता है? अल्लाह तआला कहेगा: "तू मालिक हो सकता है।" वह कहेगा मैं किस तरह मालिक हो सकता हूं? अल्लाह तआला कहेगा: "अपने भाई को माफ़ करने से तू मालिक हो सकता है।" वह कहेगा ऐ

रब, मैंने अपना हक़ माफ़ किया। अल्लाह तआला कहेगा : "अपने भाई का हाथ पकड़ और उसको जन्नत में दाखिल कर दे।"

नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह से डरो और आपस में सुलह करो। देखो, अल्लाह मुसलमानों के बीच सुलह कराता है।

— हाकिम, बैहक़ी

५. हज़रत वासिला बिन आस्क़ा रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि क़ियामत में एक ऐसा बन्दा उठाया जायेगा जिसने कोई गुनाह न किया होगा। अल्लाह तआला उससे कहेगा : "तुझे तेरे कर्म का बदला दिया जाय मैं अपनी नेमत और एहसान का बर्ताव करूं?" वह कहेगा ऐ रब, तुझे मालूम है कि मैंने तेरी कोई अवज्ञा नहीं की। अल्लाह तआला कहेगा : "उससे हमारे एहसानों का मुक़ाबला करो।" मुक़ाबला किया जायेगा यहां तक कि कोई नेकी बाक़ी न रहेगी। सभी नेकियां अल्लाह के एहसानों के मुक़ाबले में ख़त्म हो जायेंगी। अब वह कहेगा ऐ रब, मैं तेरी नेमत और रहमत चाहता हूं। अल्लाह तआला कहेगा : "हमारी नेमत और रहमत से इसको जन्नत में ले जाओ।"

फिर एक दूसरा बन्दा लाया जायेगा जो अपने आप पर भलाई करने वाला होगा और कोई गुनाह उसके जिम्मे न होगा। उससे कहा जायेगा : "क्या तूने मेरे किसी दोस्त से दोस्ती और किसी दुश्मन से दुश्मनी की थी?" वह कहेगा कि ऐ रब, मैं इस बात को पसन्द नहीं करता था कि मेरे और किसी के बीच कोई सम्बन्ध हो। अल्लाह तआला कहेगा : "मुझे अपनी इज़्ज़त और जलाल की क़सम (शक्ति, बल और प्रताप की सौगन्ध) मेरी रहमत उस व्यक्ति को नहीं मिल सकती जो मेरे दोस्तों में से किसी दोस्त से मुहब्बत न करे और मेरे दुश्मनों में से किसी दुश्मन से दुश्मनी न करे।"

— तबरानी, हाकिम, तिरमिज़ी

६. हज़रत इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह मोमिन को क़रीब करेगा और उसको अपनी हिफ़ाज़त में ले लेगा और उसे ढक लेगा और कहेगा: "क्या तू ऐसे गुनाह को जानता है? क्या तू ऐसे गुनाह को पहचानता है?" वह कहेगा हां ऐ मेरे रब, यहां तक कि अल्लाह उससे उसके सभी गुनाहों का इक़रार करायेगा और वह मोमिन अपने दिल में ख़याल करेगा कि मैं मारा गया। अल्लाह तआला कहेगा: "मैंने दुनिया में तेरे गुनाह को ढांका था और मैं ही आज तेरी बख़्शिश करूंगा।" अतः मोमिन को नेकियों का कर्म-पत्र दे दिया जायेगा।

अब रहे काफ़िर (अधर्मी) और कपटाचारी लोग, तो उनको सारे लोगों के सामने पुकारा जायेगा कि ये हैं वे लोग जिन्होंने अपने रब पर झूठी बात गढ़कर थोपी थी। जान लो कि अल्लाह की लानत है ऐसे ज़ालिमों पर। — मुस्लिम

७. हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ जो सबसे पीछे जन्नत में दाख़िल होगा और सबसे आख़िर में दोज़ख़ से निकलेगा। एक व्यक्ति क़ियामत में लाया जायेगा तो अल्लाह तआला की ओर से हुक्म होगा: "उसके सामने उसके छोटे गुनाह पेश किये जायं और उसके बड़े गुनाह उसके सामने न पेश किये जायं।" उससे कहा जायेगा: "तूने फलां दिन यह काम किया और फलां दिन ऐसा-ऐसा किया?" वह बन्दा कहेगा कि हां। उसे इनकार का साहस न होगा और वह बड़े गुनाहों के ख़याल से डर रहा होगा कि कहीं वे न पेश कर दिये जायं। अल्लाह तआला की तरफ़ से कहा जायेगा: "अच्छा इस बन्दे के हर गुनाह के बदले एक-एक नेकी है।" यह ख़ुशख़बरी और दया देखकर वह जल्दी से कहेगा कि ऐ रब, मैंने

कुछ कर्म (गुनाह) और भी किये हैं, मैं उनको यहां नहीं देख रहा हूं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने देखा कि नबी सल्ल० यह वाक़्या बयान करते हुए हंस पड़े यहां तक कि आपकी कुचलियां दिखायी दे गयीं। — मुस्लिम

८. हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि क़ियामत के दिन कुछ लोगों को हुक्म दिया जायेगा कि जन्नत की तरफ़ जाओ। जब ये लोग जन्नत के निकट पहुंचेंगे और वहां की खुशबुएं सूघेंगे और उन महलों और मकानों को देखेंगे जो जन्नती लोगों के लिए बनाये गये हैं, तो सहसा एक आवाज़ आयेगी कि उनको लौटा दो, उनका जन्नत में कोई हिस्सा नहीं है। ये लोग बहुत ही हसरत (शोक) के साथ लौटेंगे और यह हसरत ऐसी होगी कि ऐसी हसरत और रंज किसी को न हुआ होगा। कहेंगे कि ऐ हमारे रब, अगर जन्नत और उसका वह सामान जो तूने अपने मित्रों के लिए तैयार किया है दिखाने से पहले ही हमको दोज़ख़ में डाल देता, यह हमारे लिए ज़्यादा आसान होता। अल्लाह कहेगा : "यह मैंने तुमको सज़ा देने के उद्देश्य से किया है, अभागो, जब तुम सबसे अलग-थलग होते थे, तो बड़े-बड़े गुनाहों के साथ मुक़ाबला करते थे और जब तुम लोगों में आते थे तो उनसे बहुत ही नम्रता और परहेज़गारों की तरह से मिलते थे। जो कुछ तुम मेरे साथ किया करते थे, उसके विपरीत लोगों पर प्रकट करते थे। तुम लोगों से डरते थे और मुझसे नहीं डरते थे। लोगों को बड़ा समझते थे और मुझको नहीं समझते थे। और लोगों के लिए पवित्र बनते थे और मेरे लिए पवित्र नहीं बनते थे। आज मैं तुमको अज़ाब (यातना) का मज़ा चखाऊंगा और हर प्रकार के सवाब (प्रतिदान) से वंचित कर दूंगा।" — बैहक़ी

स्वर्ग-नरक
(जन्नत-दोज़ख़)

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि अल्लाह कहता है: "मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह कुछ तैयार कर रखा है जो न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी आदमी के दिल में उसका ख़याल आया।" यदि तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लो: "जैसी कुछ आंखों की ठंडक उनके लिए (नेक लोगों के लिए) छुपाकर रखी गयी है उसे कोई नहीं जानता।"

(सूर : अस-सजदा : १७)

— बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, इब्न माजह

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि जब अल्लाह ने जन्नत और दोज़ख़ को पैदा किया,तो हज़रत जिब्रील अ० को जन्नत की तरफ़ भेजा और कहा: "जन्नत को और जो चीज़ें मैंने जन्नत वालों के लिए तैयार कर रखी हैं उन्हें देखो।" आपने कहा कि हज़रत जिब्रील अ० जन्नत में आये और जन्नत और जन्नत की नेमतों को जो अल्लाह ने जन्नतवालों के लिए तैयार कर रखी हैं, उनको देखा। आप कहते हैं कि फिर वे अल्लाह के पास वापस आये और कहा कि तेरी इज़्ज़त की क़सम, जो भी उनके बारे में सुनेगा जन्नत में दाख़िल होकर रहेगा। फिर अल्लाह ने जन्नत के बारे में हुक्म दिया और वह नागवार चीज़ों (तकलीफ़ों और मशक़्क़तों) से घेर दी गयी। फिर जिब्रील से कहा: "लौटकर जन्नत की तरफ़ जाओ और देखो

कि मैंने जन्नतवालों के लिए क्या कुछ उसमें तैयार कर रखा है।" वे जन्नत की तरफ़ गये तो क्या देखते हैं कि वह नागवार चीज़ों से घिरी हुई है। वे लौटे और कहा तेरी इज़्ज़त की क़सम, मुझे तो आशंका है कि अब कोई जन्नत में दाखिल न हो सकेगा। अल्लाह ने (जब दोज़ख़ को पैदा किया तो हज़रत जिब्रील से) कहा: "दोज़ख़ की तरफ़ जाओ और उसे देखो और उसे भी जो मैंने दोज़ख़ वालों के लिए तैयार कर रखा है।" वे क्या देखते हैं कि जहन्नम की लपटें एक-दूसरे पर छा रही हैं। वे अल्लाह के पास लौटकर आये और कहा तेरी इज़्ज़त की क़सम, जो कोई भी इनके बारे में सुनेगा वह कभी उसमें दाखिल होने की कोशिश न करेगा। फिर अल्लाह ने दोज़ख़ के बारे में हुक्म दिया, तो उसे चाहतों और वासनाओं से घेर दिया गया। फिर अल्लाह ने (जिब्रील से) कहा: "दोज़ख़ की तरफ़ लौटकर (दोबारा) जाओ।" हज़रत जिब्रील उसकी तरफ़ गये और वापस आकर कहा कि तेरी इज़्ज़त की क़सम, मुझे यह आशंका है कि दोज़ख़ में दाखिल होने से कोई न बच सकेगा। — तिरमिज़ी, अबू दाऊद, नसई

३. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह उस व्यक्ति से जो क़ियामत के दिन सबसे हलके अज़ाब में होगा कहेगा: "अगर ज़मीन की सारी चीज़ें तेरे क़ब्ज़े में हों, तो क्या तू उसको इसके बदले में दे देगा कि तू अज़ाब से छूट जाय?" वह कहेगा हां फिर अल्लाह कहेगा: "मैंने तो इससे भी आसान बात तुझसे चाही थी जबकि तू आदम की पुश्त में था और यह कि तू मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न कर किन्तु तू मेरा शरीक ठहराकर रहा।" — बुख़ारी, मुस्लिम

४. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहा कि दोज़ख़ वालों में क़ियामत के दिन एक ऐसे

व्यक्ति को लाया जायेगा जो दुनिया में बहुत ज़्यादा खुशहाल था। उसको दोज़ख़ में एक ग़ोता दिया जायेगा, फिर उससे पूछा जायेगा : "ऐ आदम के बेटे, क्या तूने खुशहाली देखी? क्या तुझ पर ऐश और आराम की कोई घड़ी गुज़री?" वह कहेगा ऐ रब, अल्लाह की क़सम मैंने कभी कोई ऐश और आराम नहीं देखा।

और जन्नत वालों में से एक ऐसे व्यक्ति को लाया जायेगा जो दुनिया में बहुत ही कठिनाइयों और मुसीबतों में घिरा रह चुका होगा। उसको जन्नत में एक ग़ोता दिया जायेगा और उससे कहा जायेगा : "ऐ आदम के बेटे, क्या तूने कभी कोई तकलीफ़ देखी थी और तुझ पर कभी कठिन समय गुज़रा?" वह कहेगा ऐ रब, नहीं। न तो मुझ पर कभी कोई तकलीफ़ गुज़री और न कभी कोई कठिन घड़ी देखी। — मुस्लिम

अल्लाह का दीदार

(प्रभु-दर्शन)

१. हज़रत सुहेब रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे तो अल्लाह तआला कहेगा: "क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें कुछ अपनी और नेमतें दूं?" वे कहेंगे, क्या तूने हमारे चेहरे रौशन नहीं किये। क्या तूने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं किया और हमें दोज़ख़ से छुटकारा नहीं दिलाया (अब हमें और क्या चाहिए)। आप सल्ल० कहते हैं कि उस वक़्त पर्दा उठा दिया जायेगा और जन्नत वाले अल्लाह तआला के मुखार बिन्दु को देखने लगेंगे। फिर जो नेमतें उन्हें दी गयीं, उनमें से कोई चीज़ भी उनको अपने रब की ओर देखने से अधिक प्रिय न होगी। फ़िर आपने (क़ुरआन की) यह आयत पढ़ी: "अच्छे से अच्छा करके देने वालों के लिए अच्छा बदला और उसके अतिरिक्त कुछ और भी।" (यूनुस : १०) — मुस्लिम

२. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल, क्या हम क़ियामत के दिन अपने रब को देखेंगे? आपने कहा: क्या तुम दोपहर के वक़्त जब कि सूरज बादल में न हो तो तुम्हें सूरज के देखने में कोई सन्देह होता है? सहाबा ने कहा कि नहीं। फिर आपने कहा: क्या जिस रात को चांद पूरा हो और चांद बादल में भी न हो तो क्या चांद को देखने में तुम्हें कोई सन्देह होता है? उन्होंने कहा कि नहीं। फिर आपने

कहा: क़सम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है। तुम जिस प्रकार चांद और सूरज को देखने में सन्देह नहीं करते उसी प्रकार अल्लाह को देखने में भी तुमको उस दिन कोई सन्देह न होगा।
— मुस्लिम

३. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जबकि जन्नत वाले जन्नत की नेमतों में होंगे, सहसा उनके लिए एक नूर रौशन होगा सो वे अपने सिर उठायेंगे तो क्या देखेंगे कि उनका रब उनके ऊपर प्रगट है। अल्लाह कहेगा: "तुम पर सलाम हो ऐ जन्नत वालो।" नबी सल्ल० ने कहा कि यही अल्लाह तआला के इस कथन का अर्थ होता है। "दया करने वाले रब की ओर से सलाम कहा गया है।"

(क़ुरआन, यासीन : ५८)

आपने कहा कि अल्लाह तआला उनकी तरफ देखेगा और वे उसकी तरफ़ देखेंगे। फिर वे जब तक ख़ुदा की तरफ़ देखते रहेंगे, जन्नत की किसी नेमत की ओर ध्यान नहीं देंगे यहां तक कि अल्लाह उनसे पर्दे में हो जायेगा और बाक़ी रह जायेगा उसका नूर।
— इब्न माजह

उसका फ़ैसला

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह तआला ने हज़रत इबराहीम अ० की तरफ़ 'वह्य' (प्रकाशना) की: "ऐ मेरे मित्र, तुम्हारे अच्छे अख़्लाक़ (सज्जनोचित व्यवहार) चाहे वे काफ़िरों (अधर्मियों) ही के साथ हों, तुमको नेक लोगों की जमात में दाख़िल कर देंगे। मैं यह बात बहुत पहले कह चुका हूं कि जिस व्यक्ति का अख़्लाक़ अच्छा होगा, उसे अपने अर्श (सिंहासन) की छाया में जगह दूंगा, और अपनी जन्नत में रखूंगा और अपने पड़ोस से क़रीब करूंगा।"

— हाकिम, तिरमिज़ी

२. हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि जब कोई व्यक्ति क़र्ज़ लेता है और उसकी नीयत अदा करने की होती है और मर जाता है, तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसका क़र्ज़ चुका देगा। और जो व्यक्ति क़र्ज़ लेता है और उसकी नीयत अदा करने की नहीं होती है और मर जाता है, तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उससे कहेगा: "क्या तू यह समझता था कि मैं अपने बन्दे का हक़ नहीं लूंगा?" फिर उसकी नेकियां क़र्ज़ देने वाले को दिला दी जायेंगी और यदि उसके पास नेकियां न हुईं, तो क़र्ज़ देने वाले के गुनाह उसकी तरफ़ स्थानान्तरित कर दिये जायेंगे। तबरानी, हाकिम

३. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने कहा कि अल्लाह जन्नत वालों से कहेगा: "ऐ जन्नत

वालो।" वे कहेंगे ऐ हमारे रब, हम हाज़िर हैं और आपकी सेवा में बार-बार हाज़िर हैं और सारी भलाई आपके हाथों में है। अल्लाह कहेगा: "क्या तुम राज़ी और ख़ुश हो?" वे कहेंगे हम अपने रब से क्यों न राज़ी होंगे जबकि उसने हमें वह कुछ प्रदान किया जो अपनी मख़्लूक़ (अपने पैदा किये हुए प्राणी जीव आदि) में से किसी को भी नहीं दिया। अल्लाह कहेगा: "क्या मैं तुम्हें इससे भी उत्तम चीज़ न दूं?" वे कहेंगे ऐ रब, इससे उत्तम चीज़ क्या होगी? अल्लाह कहेगा: "मैं तुम पर अपनी ख़ुशी और रज़ा उड़ेल दूंगा, फिर इसके बाद अब कभी तुमसे नाराज़ और नाख़ुश नहीं हूंगा।"

— बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी